04 - क्या ईशान के लिये अब परमाणु परीक्षण जरूरी हो गया है ?

05 - डीजल का धुआं : मस्तिष्क पर मंडराता अदृश्य खतरा

06 - मकर संक्रांति पर जरूर करें तुलादान

07 - श्री वैष्णव बैरागी युवा संगठन धार के तत्वाधान में जगतगुरु श्री श्री 1008...

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

भोपाल

बुधवार, 14 जनवरी, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 134, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

सत्ता की मलाई के लिए दोस्तों में झगड़ा, विरोधियों से यारी

संदीप सोनवलकर

महाराष्ट्र में इन दिनों स्थानीय निकायों के चुनाव हैं। पहले चरण में नगरपरिषद के चुनाव हुए और अब 29 महानगरपालिका चुनाव हो रहे हैं लेकिन सत्ता की मलाई को लेकर इतनी मारपीट है कि कोई अपना नहीं और कोई पराया नहीं। मुंबई से सटे अंबरनाथ में एकनाथ शिंदे की पार्टी के ज्यादा कॉरपोरेटर आये लेकिन सत्ता बीजेपी को चाहिए थी तो कांग्रेस के ही 12 कॉरपोरेटर रातों रात बीजेपी में मिला लिये। दो दिन में शिंदे ने खेल पलट दिया और एनसीपी के चार कॉरपोरेटर तोड़ कर आख़िरकार सत्ता हासिल कर ली। एक और इलाके अकोट में तो बीजेपी ने उस एमआईएम से साथ मिलकर सत्ता हासिल कर ली जिसको वो दिन रात कोसती है। कुल मिलाकर सबको सत्ता चाहिये बस, विचारधारा चाहे जाये भाड़ में।

असल में केंद्र और राज्य में सत्ता पाने के बाद बीजेपी अब स्थानीय निकायों पर कब्जा करना चाहती है क्योंकि असल काम तो वहीं से होते हैं। बीजेपी के एक पूर्व सांसद, जिनको बीजेपी ने अब किनारे पर कर दिया है, वो कहते हैं कि सांसद और विधायक से ज्यादा माल तो कॉरपोरेटर बनने पर मिलता है। आंकड़ों में ये बात सामने भी आ रही है। पिछली बार जीते कॉरपोरटरों ने जब इस बार चुनाव का डिक्लेरेशन दिया तो उनमें से कई की संपत्ति चार सौ से पांच सौ गुना बढ़ गयी।

जानकार बताते हैं कि मुंबई महानगरपालिका का बजट 80 हजार करोड़ रुपये का है जो कुछ राज्यों के बजट से भी ज्यादा है और जब बजट ज्यादा होगा तो माल कमाने का मौका भी उतना ही मिलता है। कुछ पूर्व कॉरपोरटरों ने बताया कि बीएमसी में सबसे सही लोकतंत्र है जिसके जितने कॉरपोरेटर होते हैं उस पार्टी को हर काम में उतना प्वाइंट परसेंटेज मिल जाता है। इसके अलावा सभी कॉरपोरेटर अपने इलाक़े में होने वाले हर काम के लिए और बिल्डर से पैसा लेते हैं। इस तरह सब खुश रहते हैं। यही हाल सभी बड़ी महानगरपालिकाओं का है। ये लक्ष्मी देवी का ही असर है कि हर कोई महानगरपालिका में जान लगा देता है।

जहाँ तक बात गठबंधन की करें तो कोई नहीं बचा है। बीजेपी के गठबंधन महायुति मिलकर 29 महानगरपालिकाओं में से केवल 16 में गठबंधन पर है, बाकी जगह अलग-अलग लड़ रहे हैं। पिंपरी चिंचवड़ और पुणे में तो एनसीपी के चाचा-भतीजे मिल गये और बीजेपी उनके खिलाफ लड़ रही है। बीजेपी ने भ्रष्टाचार का आरोप लगाया तो अजित पवार ने कहा कि मुझ पर भी 70 हजार करोड़ करप्शन के आरोप लगे और जिन्होनें लगाये उनके साथ अब सत्ता में हूं। ये आरोप खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सीएम देवेंद्र फणनवीस ने लगाये थे।

बीजेपी कई जगहों पर अपने सहयोगी और उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की पार्टी को निपटाने में लगी है। सहयोगी रामदास आठवले को तो एक भी सीट नहीं दी गयी लेकिन उनको अप्रैल में राज्यसभा सीट और मंत्री पद बचाना है, इसलिए चुप हो गये हैं।

उधर, इंडिया गठबंधन भी तार-तार हो गया है। मनसे से समझौता नहीं करने का बहाना करके लोकल कांग्रेसियों ने दबाव बनाया तो गठबंधन टूट गया। राज और उद्धव ठाकरे साथ आ गये और मराठी अस्मिता के सवाल पर साथ लड़ रहे हैं। उधर कांग्रेस ने अकेले लड़ने का एलान किया लेकिन हिम्मत नहीं जुटा पायी। बाद में दिल्ली के दवाब में प्रकाश आंबेडकर की वंचित बहुजन आघाड़ी को 62 सीटें दे दीं लेकिन वंचित ने एन वक्त पर 16 सीटों पर लड़ने से इंकार कर दिया तो कांग्रेस भी कुछ नहीं कर पायी और बीजेपी को इसका फायदा मिल रहा है। कांग्रेस ने भी अपनी क़रीब 157 सीटों पर जमकर खेल किया है और कई जगहों पर कांग्रेसी नेताओं ने अपने ही बेटा-बेटी को टिकट देकर मामला सेट कर लिया है। उधर, कांग्रेस मुंबई छोड़कर कुछ अन्य जगहों पर शिवसेना उद्धव और मनसे के साथ मिलकर चुनाव लड़ रही है। कुल मिलाकर कोई नहीं बचा। बस जीतने की उम्मीद और आगे मलाई मिलने की आशा में ताकत लगा रहे हैं।

सबने बीएमसी पर राज किया है इसलिए कोई एक दूसरे के खिलाफ बहुत कोई मुद्दा भी नहीं बना पा रहा है। शिवसेना के साथ बीजेपी भी लंबे समय तक सत्ता में रही तो कांग्रेस ने भी मलाई काटी है। उधर, शहर का हाल ये कि मुंबई किसी अंतरराष्ट्रीय शहर तो छोड़िये पिछड़े इलाकों की तरह गंदा लगता है। चुनाव के बीच लाडकी बहिन योजना का पैसा देंगे!

ठाकरे बंधु मिलकर ज़रूर मराठी का मुद्दा खेलने में कामयाब रहे हैं लेकिन बीजेपी और शिंदे की शिवसेना के पास अभी एक तुरुप का इक्का बाकी है। वो 15 जनवरी को चुनाव से ठीक एक दिन पहले सभी महिलाओं के खाते में लाडकी बहिन योजना का दो महीने का पैसा यानी 3 हजार रुपये डालने वाले हैं। कांग्रेस ने इसके खिलाफ चुनाव आयोग में चिट्ठी दी है, लेकिन चुनाव आयोग क्या करेगा इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आयोग ने राज्य के मुख्य सचिव से सिर्फ जवाब मांगा है, पैसा रोकने को नहीं कहा। वैसे भी बिहार में जब बीच चुनाव में दस हजार रुपये मिलते रहे तो इसको कौन रोकेगा। बीजेपी और शिंदे की शिवसेना को उम्मीद है कि एक दिन पहले दिया गया ये पैसा जमकर वोट दिलायेगा।

कुल मिलाकर लोग परेशान हैं कि विकसित भारत के सपने के बीच भी मुंबई में पानी,सड़क, सफाई और ट्रैफिक जाम जैसे मुद्दे उसे रोज रुलाते हैं, लेकिन नेताओं और दलों को बस सत्ता की पड़ी है। वैसे भी मुंबई में स्थानीय चुनाव में 50 से 55 प्रतिशत तक ही वोट होता है, ऊपर से ये सब तमाशा देखकर बहुत से लोग वोट से दूर रहने का ही मन बना रहे हैं। अगर कम वोटिंग हुई तो चुनाव में जीत का अंतर 200 से 1 हजार वोट तक हो सकता है और तब त्रिकोणीय लड़ाई में कई दिग्गज जीत और हार सकते हैं। वैसे, 147 सीटों पर लड़ रही बीजेपी को उम्मीद है कि मुंबई की 227 कॉरपोरेटर वाली मुंबई बीएमसी पर उसका ही कब्जा होगा और वो एकनाथ शिंदे के साथ मलाई नहीं बांटना चाहती। बीजेपी इस बार राज्य में ज्यादा सत्ता हासिल कर शत-प्रतिशत बीजेपी का नारा पूरा करना चाहती है। उधर, एकनाथ शिंदे और अजित पवार खुद को खेल में बनाये रखने के लिए चुनाव लड़ रहे हैं तो उद्धव ठाकरे की शिवसेना, राज ठाकरे की मनसे और कांग्रेस के लिए अस्तित्व बचाये रखने का सवाल है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित रिपोर्ट के संपादित अंश साभार)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

कुहरे वाले दिनों में
नाना प्रकार के अलाव हैं
किसी में लपट
किसी में धुआँ है
कहीं कहीं सुलगती आग है
और कहीं दबी चिन्गारी है
मकानों दुकानों के ताजा अलाव
मजहबों के कौमी झण्डाबरदारी के
मठ मठाधीशों के और जन नायकों के
अलग अलग मौजों-मजरों के
और अपनी-अपनी मेड़ों के
महरूमों मजलूमों के
लाचारों के और बुद्धिजीवियों के
घर भीतर-बाहर के
माँ बाप की पनियाई आँखों के
बहुओं के बेटियों के
और बालजती कन्याओं के
जल रहे हैं अलाव उघारीय नग्नता के
सरे राह निर्वस्त्र निर्लज्जता के
और बाजारू घरौटन के
कुछ अलाव हैं जिन पर अधिकार है
साधकों का साधने वालों का
और दूर से निहारते ठिठुरते
पेट मलते मेधावियों का
घाट पर सजे अलाव में
पाप-प्रायश्चित की लुठाती तपिश है
अलाव जलवा दिये गये हैं
गली कूचों नुक्कड़ चौराहों पर
और मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा गिरिजाघर पर
अभिव्यिक्त की खोदी जड़ें देती ईंधन
और सिसक ठिठुरन आक्सीजन
जो जल जाए वही काम का है
सेंकते रहिए हाथ।

– डॉ. श्यामबाबू शर्मा

हमें बिल्कुल मंजूर नहीं, ड्रोन ऑपरेशन रोके पाकिस्तान

आर्मी चीफ जनरल द्विवेदी ने पड़ोसी देश को सुना दी खरी-खरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान की ओर से जम्मू-कश्मीर में एलओसी के करीब ड्रोन गतिविधि बढ़ाए जाने को लेकर भारतीय सेना ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने मंगलवार को पाकिस्तान से आने वाले ड्रोन को लेकर अपनी बात रखी। आर्मी चीफ ने पाकिस्तान की तरफ से आने वाले ड्रोन की क्षमता, आकार और उनकी मंशा का भी जिक्र किया। जनरल द्विवेदी ने साफ कहा कि पाकिस्तान की तरफ से छोटे डिफेंसिव ड्रोन भेजे जा रहे हैं। वे लोग देखना चाहते हैं कि भारत की तरफ से उनको लेकर क्या रुख होता है। सेना प्रमुख ने कहा कि ड्रोन्स के मुद्दे को डीजीएमओ लेवल पर उठाया गया है। भारत ने पाकिस्तान से साफ कहा है कि उसे यह बिल्कुल स्वीकार्य नहीं है। भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा कि जहां तक ड्रोन की बात है, हमने जो ड्रोन देखे हैं, वे बहुत छोटे ड्रोन हैं। वे अपनी लाइट जलाकर आते हैं। वे बहुत ज्यादा ऊंचाई पर नहीं उड़ते हैं, और उन्हें बहुत कम बार देखा गया है। 10 जनवरी को लगभग 6 ड्रोन देखे गए थे, और 11 और 12 जनवरी को 2 से 3 ड्रोन देखे गए थे। मेरा मानना है कि ये डिफेंसिव ड्रोन थे, जो यह देखने की कोशिश कर रहे थे कि क्या हमारे खिलाफ कोई कार्रवाई की जा रही है।

- **डीजीएमओ से ड्रोन मुद्दे पर हुई बातचीत**– सेना प्रमुख ने कहा कि हो सकता है कि वे यह भी देखना चाहते हों कि भारतीय सेना में कोई कमी या ढिलाई तो नहीं है, कोई ऐसी जगह तो नहीं है जहां से वे आतंकवादियों को भेज सकें। तो, मुझे लगता है कि उन्हें नेगेटिव जवाब मिला होगा। उन्होंने देखा होगा कि आज की तारीख में ऐसी कोई जगह, कोई कमी नहीं है जहां से वे उन्हें भेज सकें। जनरल द्विवेदी ने कहा, लेकिन यह पक्का है– आज हमारी डीजीएमओ (डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशंस) से बात हुई। उस बातचीत में इस मामले पर चर्चा हुई है।

आर्मी चीफ बोले- 1963 का पाक-चीन समझौता अवैध

आर्मी चीफ ने कहा कि भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच 1963 के समझौते को अवैध मानता है। जिसके तहत पाकिस्तान ने शक्सगाम घाटी में अपना क्षेत्र चीन को सौंप दिया था। उन्होंने कहा कि हम वहां किसी भी गतिविधि को स्वीकार नहीं करते हैं। जहां तक चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का सवाल है। हम इसे स्वीकार नहीं करते। हम इसे दोनों देशों की अवैध कार्रवाई मानते हैं।

लेफ्ट के गढ़ में सेंध लगाने का बन गया प्लान

- **अमित शाह ने संभाली कमान, बीजेपी का मिशन केरल**

तिरुअनंतपुरम (एजेंसी)। भाजपा की पहुंच से सबसे दूर रहने वाला दक्षिण भारत का केरल राज्य अब पार्टी की भावी रणनीति का बड़ा केंद्र बन गया है। इस बार के विधानसभा चुनाव को पार्टी यहां पर बड़ी छलांग लगाने की कोशिश में है, जिसकी कमान खुद गृह मंत्री अमित शाह संभाले हुए हैं। भाजपा ने यहां पर जो कभी नहीं बदला है, वह अब बदलेगा का नारा दिया है। हाल में हुए स्थानीय निकायों के चुनाव में राजधानी तिरुवनंतपुरम की नगर निगम व दो नगर पालिकाओं में जीत के बाद भाजपा यहां पर काफी उत्साहित है। यही वजह है कि अमित शाह ने अपने हाल के केरल दौरे में कार्यकर्ताओं में जोश को भरा और नारा दिया कि जो कभी नहीं बदला, वह अब बदलेगा।

एमपी कैबिनेट में मिली कई बड़े फैसलों को मंजूरी

शिक्षकों के लिए चतुर्थ क्रमोन्नत वेतनमान योजना लागू

800 मेगावाट सोलर परियोजनाओं पर भी लग गई मुहर

भोपाल। मोहन यादव सरकार ने आज स्पेस टेक नीति-2026 को मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही सोलर एनर्जी को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 800 मेगावाट बिजली से संबंधित तीन एजेंडों को मंजूरी दी है। इनमें सोलर सह 4 घंटे की 300 मेगावाट विद्युत प्रदाय स्टोरेज परियोजना, सोलर सह 6 घंटे की 300 मेगावाट विद्युत प्रदाय स्टोरेज परियोजना और 24 घंटे की 200 मेगावाट सोलर सह स्टोरेज परियोजना की स्थापना शामिल है। उधर, कैबिनेट ने एक बार फिर इंदौर नगर के मध्य स्थित जामा मस्जिद के नमाजियों और क्षेत्र के नागरिकों के लिए चिकित्सालय, वाचनालय, उद्यान, कम्युनिटी हॉल और विद्यालय बनाने के लिए भूमि आवंटन से जुड़े दिग्विजय सरकार के फैसले पर पुनर्विचार के लिए एजेंडा लाया है। यह एजेंडा पिछले माह भी कैबिनेट में आ चुका था लेकिन ऐन मौके पर इसे डिफर कर दिया गया था। यह एजेंडा दिग्विजय सरकार के 27 सितम्बर 2003 के फैसले पर पुनर्विचार के लिए लाया गया। हालांकि इस पर फैसले के बारे में जानकारी नहीं दी गई। कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते हुए डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने बताया कि स्पेस टेक नीति को मंजूरी दिए जाने से स्थानीय स्तर पर उपग्रह निर्माण को लेकर कवायद होगी और पांच साल में इसमें एक हजार करोड़ रुपए का निवेश आएगा। इस नीति से 8 हजार रोजगार सृजन की भी बात कही गई है। इससे पहले ब्रीफिंग के लिए ऐन वक्त पर मंत्री का चेंबर बदला दिया गया। मंत्रि-परिषद द्वारा द्वितीय चरण के लिए 200 सर्वसुविधा युक्त सांदीपनि विद्यालय की स्थापना के लिए अनुमानित व्यय 3 हजार 660 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई। द्वितीय चरण के प्रस्तावित विद्यालयों की क्षमता एक हजार से अधिक होगी। मंत्रि-परिषद द्वारा सिंहस्थ-2028 के दृष्टिगत उज्जैन शहर की जल आवर्धन योजना लागत 1,133 करोड़ 67 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई। मंत्रि-परिषद द्वारा जिला मऊगंज में हुई घटना में दिवंगत स्व. रामचरण गौतम, सहायक उप निरीक्षक के परिवार को 90 लाख रुपये की श्रद्धा निधि दिये जाने की स्वीकृति दी गयी। उल्लेखनीय है कि दिवंगत स्व. गौतम के परिवार को 10 लाख रुपये की विशेष अनुग्रह राशि पूर्व में 1 अप्रैल 2025 को प्रदान की जा चुकी है।

ग्वालियर व्यापार मेले में ऑटोमोबाइल पर छूट

मंत्रि-परिषद द्वारा ग्वालियर व्यापार मेला-2026 एवं उज्जैन विक्रमोत्सव व्यापार मेला 2026 में ऑटोमोबाइल विक्रय पर मोटरयान कर में 50 प्रतिशत छूट दिये जाने की स्वीकृति प्रदान की गई। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तीन सोलर सह स्टोरेज प्रदाय परियोजना की स्वीकृति प्रदान की गई है। स्वीकृति अनुसार रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर लिमिटेड द्वारा विकसित की जा रही परियोजना के अंतर्गत सोलर-सह चार घंटे 300 मेगावाट, सोलर सह छह घंटे 300 मेगावाट एवं सोलर-सह 24 घंटे 200 मेगावाट विद्युत प्रदाय की सिंगल साइकिल चार्जिंग आधारित ऊर्जा भंडारण परियोजना की स्वीकृति प्रदान की गयी है। इस परियोजना से राज्य में पीक डिमांड के समय भी सस्ती, स्वच्छ एवं भरोसेमंद विद्युत उपलब्ध हो सकेगी। सौर ऊर्जा परियोजनाओं से उपलब्ध विद्युत केवल दिन के समय उपलब्ध रहती है और इसकी उपलब्धता मौसम पर निर्भर करती है।

मुंबई-पुणे एक्सप्रेस-वे की तरह बिहार में बनेंगे हाईवे

● मिनिमम 100 की स्पीड,लेकिन आपको देना होगा ज्यादा पैसा ● बिहार में अब पांच एक्सप्रेस वे बनाने का प्लान हो रहा तैयार

पटना (एजेंसी)। नीतिश सरकार बिहार में हाईवे के बाद अब एक्सप्रेस वे का नया नेटवर्कतैयार करेगी। ये एक्सप्रेस वे राज्य सरकार के होंगे। शुरुआत में 5 नए एक्सप्रेस वे का निर्माण किया जाएगा। इसका प्रपोजल तैयार कर सीएम के पास भेजा गया है। वहां से स्वीकृति मिलते ही इसके एलाइनमेंट और डीपीआर बनाने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। मुंबई-पुणे एक्सप्रेस वे के आधार पर बिहार में नए एक्सप्रेस वे बनेंगे। इन पर गाड़ियां 100 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ेंगी। इन्हें बनाने के लिए पैसे जुटाने का तरीका मुंबई-पुणे एक्सप्रेस वे जैसा होगा। इसकी तैयारी शुरू हो गई है। इन पर चलने के लिए आम लोगों को ज्यादा पैसे देने होंगे। इससे सड़क बनाने की लागत वसूल होगी। दरअसल मुंबई-पुणे एक्सप्रेस वे देश का पहला सिक्स लेन एक्सप्रेस वे है। लगभग 95 किमी लंबी इस सड़क का निर्माण 1994 में शुरू हुआ था। 2002 में काम पूरा हुआ। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसका उद्घाटन किया था। इसे बनाने का श्रेय मौजूदा केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को जाता है। सबसे बड़ी खासियत इसे बनाने में होने वाला खर्च है। देश की पहली हाई स्पीड सड़क का निर्माण बीओटी (बिल्ड ऑपरेट ट्रांसफर) मॉडल के तहत कराया गया था। निजी भागीदारी के तहत सड़क बनाने के इस मॉडल में सरकार को निर्माण के लिए बेहद कम राशि देनी होती है। इसे बनाने की पूरी जिम्मेदारी निर्माण कंपनी की होती है।

जहां ज्यादा एक्सप्रेस वे वहां की स्टडी करेगी टीम, फिर फैसला

एक्सप्रेस वे निर्माण प्रक्रिया समझने के लिए बिहार सरकार ने एक हाई लेवल कमेटी का गठन किया है। इसमें पथ निर्माण विभाग के सचिव, बिहार राज्य पथ विकास निगम के महाप्रबंधक और विभाग के मुख्य कार्यपालक अभियंता शामिल हैं। कमेटी के लोग पहले उन राज्यों में जाएंगे जहां सबसे ज्यादा एक्सप्रेस वे हैं। कमेटी के सदस्य मुख्य तौर पर महाराष्ट्र, गुजरात और यूपी का दौरा करेंगे। इन राज्यों में सबसे ज्यादा एक्सप्रेस वे का निर्माण हुआ है या हो रहा है। महाराष्ट्र में अभी 11 एक्सप्रेस वे परियोजनाएं चल रही हैं। यूपी में इनकी संख्या 12 और गुजरात में 7 है। कमेटी एक्सप्रेस वे निर्माण की स्टडी करेगी। टेक्निकल से लेकर फाइनेंस और सोशल इम्पैक्ट तक, हर तरह के असर को समझेगी। इसी आधार पर अपनी रिपोर्ट देगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 14 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बीजेपी के नेताओं से मिला सीपीसी का प्रतिनिधिमंडल

● भड़की कांग्रेस, पूछा-चीन से कौन सा गुप्त समझौता हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) के एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने सोमवार को नई दिल्ली में बीजेपी मुख्यालय में कई नेताओं से मुलाकात की। चीन के साथ शक्सगाम घाटी पर गरमाए विवाद के बीच कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना और बीजेपी नेताओं की इस मुलाकात को लेकर अब कांग्रेस ने पीएम मोदी पर हमला बोला है। कांग्रेस ने सवाल पूछते हुए कहा कि बीजेपी-चीन में कौन सा गुप्त समझौता हुआ और पीएम मोदी चीन का लाल आंख कब दिखाएंगे। कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रेनेत ने मंगलवार को सोशल मीडिया अकाउंट पर बीजेपी और सीपीसी नेताओं की मुलाकात की तस्वीर शेयर करते

हुए कहा कि बीजेपी के नेता और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के बीच मीटिंग हो रही है। यह वही चीन है जिसने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान का साथ दिया था, गलवान में हमारे जांबाजों ने शहादत हुई। कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि, चीन लद्दाख में अतिक्रमण किए बैठा है, अरुणाचल में गांव बसा रहा है और यहां बातचीत हो रही है। उन्होंने सवाल पूछते हुए कहा कि यह रिश्ता क्या कहलाता है? बीजेपी ने क्यों किया देशद्रोह? बीजेपी-चीन में कौन सा गुप्त समझौता हुआ है।

वेनेजुएला से निकले रूसी तेल टैंकर से अरेस्ट भारतीय छूटे

● अमेरिका ने भारत को दी गुड न्यूज, 3 भारतीयों को किया रिहा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी सेना ने वेनेजुएला से निकले रूसी झंडे वाले तेल टैंकर जहाज पर तैनात भारतीय क्रू मेंबर्स को रिहा कर दिया है। अमेरिकी अधिकारियों ने इसकी जानकारी दी है। इस जहाज को पिछले हफ्ते नॉर्थ अटलांटिक में जब्त किया गया था। बाद में पता चला था कि इसमें तीन भारतीय क्रू मेंबर्स थे, जिनमें से एक हिमाचल प्रदेश के रहने वाले हैं। इस जहाज का नाम मैरिनेरा था। इस टैंकर को नॉर्थ अटलांटिक के अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में अमेरिकी

ऑपरेशन के दौरान रोका गया था। अमेरिकी अधिकारियों ने कहा है, कि यह जहाज शैडो फ्लीट का हिस्सा था, जो वेनेजुएला, रूस और ईरान जैसे बैन वाले देशों के लिए तेल ट्रांसपोर्ट करने में शामिल था। रिपोर्ट के मुताबिक, इस टैंकर में कुल 28 क्रू मेंबर्स थे, जिनमें तीन भारतीय नागरिकों के अलावा यूक्रेनी, रूसी और जॉर्जियाई क्रू मेंबर शामिल थे। जहाज को जब्त करने के बाद अमेरिकी सेना ने सभी क्रू मेंबर्स को हिरासत में ले लिया था। पहले कहा गया था कि सभी क्रू मेंबर्स के खिलाफ मुकदमा चलाया जाएगा, लेकिन अब अमेरिकी अधिकारियों ने भारतीय नागरिकों को रिहा कर दिया है। इस जहाज पर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के रहने वाले 26 साल के रक्षित चौहान भी थे, जिन्हें रिहा कर दिया है।

2026 में 'कमल' से सजेगा ब्रिक्स का मंच

भारत की अध्यक्षता में समूह का और बढ़ेगा रुतबा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की अध्यक्षता में 2026 में ब्रिक्स का मंच कमल से सजने से जा रहा है। दरअसल विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मंगलवार को ब्रिक्स 2026 के लिए आधिकारिक लोगो और वेबसाइट लॉन्च की है। इस लोगो में मौजूद कमल सबका ध्यान अपनी ओर खींच रहा है। लॉन्च के बाद विदेश मंत्री ने कहा है कि भारत की अध्यक्षता के दौरान ब्रिक्स समूह के जरिए वैश्विक कल्याण को आगे बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा, खासकर ऐसे समय में जब समूह अपनी 20वीं वर्षगांठ मना रहा है। बता दें कि दुनिया की पांच बड़ी अर्थव्यवस्थाएं ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका ब्रिक्स समूह की अगुवाई करती हैं। इसकी स्थापना साल

2006 में हुई थी। बीते कुछ सालों में समूह का तेजी से विस्तार हुआ जहां मिस्र, इथियोपिया, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात और इंडोनेशिया भी पूर्ण सदस्य के रूप में ब्रिक्स में शामिल हो गए। अधिकारियों के मुताबिक नए लोगो की प्रेरणा कमल से ली गई है। यह भारत की गहरी सांस्कृतिक विरासत और मजबूती का प्रतीक है। लोगो की पंखुड़ियों में ब्रिक्स देशों के रंग दिखाए गए हैं, जो अलग अलग आवाजों को एक साझा मकसद के साथ जोड़ने का संदेश देते हैं। वहीं लोगो के बीच में नमस्कार का चिन्ह है, जो सम्मान और सहयोग की भावना को दर्शाता है। इसके साथ एक टैगलाइन भी रखी गई है,लचीलेपन, नवाचार, सहयोग और सतत विकास के लिए निर्माण। जयशंकर ने इस दौरान ब्रिक्स की नई वेबसाइट भी लॉन्च की।

ब्रिक्स की मजबूती से तिलमिलाया है अमेरिका

शुरुआत के बाद से ही ब्रिक्स एक अहम वैश्विक मंच के तौर पर उभरकर सामने है। फिलहाल इसमें कुल 11 सदस्य देश शामिल हैं, जो दुनिया की करीब 49.5 प्रतिशत आबादी, लगभग 40 प्रतिशत वैश्विक जीडीपी और करीब 26 प्रतिशत वैश्विक व्यापार का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं भारत की 2026 की अध्यक्षता में ब्रिक्स से वैश्विक स्तर पर सहयोग और प्रभाव और बढ़ने की उम्मीद है। समूह ने समय समय पर अमेरिकी डॉलर के वर्चस्व को सीधी चुनौती देने की भी कोशिश की है, जिससे अमेरिका तिलमिलाया हुआ है।

घुसपैठियों की खैर नहीं, अब होगा बड़ा ऐक्शन

● एनआईए ने अवैध बांग्लादेशी मामले की जांच अपने हाथ में ली

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ मामले की जांच को अपने हाथ में ले लिया है, जो अब तक दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के पास थी। मंगलवार को अधिकारियों ने बताया कि एनआईए ने पिछले सप्ताह दिल्ली पुलिस से यह मामला ट्रांसफर कर लिया और जांच शुरू कर दी है। एजेंसी ने मामले में एक नया एफआईआर भी दर्ज किया है। गृह मंत्रालय के निर्देश पर यह कदम उठाया गया है, ताकि अवैध प्रवास को ऑपरेट करने वाले नेटवर्क पर सख्त कार्रवाई हो सके। ये नेटवर्क राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा

कर सकते हैं। दिल्ली पुलिस ने राष्ट्रीय राजधानी में अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई के दौरान 2 एफआईआर दर्ज किए थे, जिसमें इस घुसपैठ के पीछे एक गहरी साजिश होने का दावा किया गया था। दिल्ली पुलिस की जांच में कई अहम पहलुओं पर फोकस किया गया था, जैसे भारत में अवैध तरीके से प्रवेश के रूट, जाली पहचान दस्तावेज तैयार करने वाले सिंडिकेट, घुसपैठियों को ठहरने की व्यवस्था मुहैया कराने वाले लोग और उनके लिए रोजगार दिलाने वाले एजेंट। पुलिस ने इस संगठित गिरोह की पूरी संरचना को उजागर करने और विभिन्न स्तरों पर शामिल प्रमुख ऑपरेटिव्स की पहचान करने की कोशिश की थी।

एनआईए को कई पहलुओं की करनी होगी जांच- अब एनआईए के नियंत्रण में आने के बाद जांच की गुंजाइश काफी बढ़ गई है। एजेंसी अब पूरे सिंडिकेट को ट्रेस करने, मनी ट्रेल का पीछा करने, फंडिंग चैनलों की जांच करने और अंतरराज्यीय व सीमा पार लिंक्स का पता लगाने पर जोर दे रही है। यह जांच अवैध घुसपैठ के रैकेट के पीछे छिपी व्यापक साजिश को उजागर करेगी।

प्राइवेट स्कूलों की मान्यता व नवीनीकरण के लिए आवेदन की अंतिम तिथि अब 20 जनवरी

भोपाल। राज्य शिक्षा केन्द्र, ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत संचालित प्राइवेट स्कूलों की मान्यता एवं मान्यता नवीनीकरण के संबंध में महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए हैं। शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए सभी अशासकीय विद्यालयों को अनिवार्य रूप से ऑनलाइन माध्यम से मान्यता नवीनीकरण अथवा नवीन मान्यता के लिए आवेदन करना होगा।

राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा जारी आदेश के अनुसार पूर्व में आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2025 निर्धारित की गई थी, किन्तु तकनीकी एवं व्यावहारिक समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए इसे बढ़ाकर अब 20 जनवरी 2026 कर दिया गया है।

राज्य शिक्षा केन्द्र ने स्पष्ट किया है कि शिक्षा का अधिकार नियम 11 के उपनियम 4(ग) के तहत यदि कोई स्कूल निर्धारित समय-सीमा में ऑनलाइन आवेदन नहीं करता है, तो उस स्कूल को मान्यता विहीन माना जाएगा और विद्यालय का संचालन शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 18 के अंतर्गत दंडनीय अपराध होगा।

स्कूलों के निर्माण कार्य समय सीमा में हों पूरे : मंत्री सिंह

गुणवत्ता और पारदर्शिता के लिए स्कूल शिक्षा विभाग में स्थापित करें टेक्निकल विंग

भोपाल। स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री उदय प्रताप सिंह ने मंत्रालय में स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए सभी वर्किंग एजेंसियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी निर्माण कार्य निर्धारित समय-सीमा में अनिवार्य रूप से पूरे किए जाएं। उन्होंने कहा कि यदि कोई एजेंसी तय टाइमलाइन में कार्य पूर्ण नहीं करती है, तो उसके विरुद्ध निर्माण अनुबंध की शर्तों के अनुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में मध्यप्रदेश पुलिस हाउसिंग बोर्ड, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, पीआईयू, आईडीए, बीडीए, यूडीए और भवन विकास निगम सहित विभिन्न वर्किंग एजेंसियों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की।

मंत्री श्री सिंह ने निर्देश दिए कि मासिक आधार पर कार्यों की प्रगति की समीक्षा की जाए तथा स्टेप-बाय-स्टेप और मंथ-बाय-मंथ लक्ष्य तय कर निर्माण कार्य पूरे किए जाएं। मंत्री ने कहा कि प्रत्येक एजेंसी अपनी

कार्ययोजना स्पष्ट रूप से विभाग को उपलब्ध कराए। निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष जोर देते हुए मंत्री श्री सिंह ने स्कूल शिक्षा विभाग में एक तकनीकी विंग गठित करने के निर्देश दिए। यह तकनीकी विंग विभागीय जांच दल के रूप में कार्य करेगा और निर्माण कार्यों की गुणवत्ता, प्रगति एवं मानकों की नियमित जांच करेगा। उन्होंने कहा कि चेक एंड बैलेंस का मजबूत सिस्टम विकसित किया जाना आवश्यक है, ताकि किसी भी स्तर पर लापरवाही न हो। मंत्री श्री सिंह ने सभी वर्किंग एजेंसियों को निर्देश दिए कि वे थर्ड पार्टी इंस्पेक्शन की रिपोर्ट अनिवार्य रूप से विभाग को प्रस्तुत करें, ताकि निर्माण कार्यों की निष्पक्ष और तकनीकी जांच सुनिश्चित हो सके। बैठक में सांदीपनि विद्यालयों से संबंधित प्रयोगशालाओं, अतिरिक्त कक्षों, खेल मैदानों एवं अन्य शैक्षणिक अधोसंरचना से जुड़े निर्माण कार्यों की भी विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में सचिव स्कूल शिक्षा डॉ संजय गोयल एवं आयुक्त लोक शिक्षण संचालनालय श्रीमती शिल्पा गुप्ता भी उपस्थित रहीं।

कुत्ते ने काटा तो राज्य सरकार देगी मुआवजा

● सुप्रीम कोर्ट का अहम फैसला, राज्यों की ढिलाई पर लगाई लताड़

बोला- जो आवारा कुत्तों को लेकर चिंतित हैं, वे अपने घर ले जाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को आवारा कुत्तों के हमलों पर सख्त टिप्पणी की। अदालत ने कहा, बच्चों या बुजुर्गों को कुत्तों के काटने, चोट लगने या मौत के हर मामले में हम राज्य सरकारों से भारी मुआवजा दिलवाएंगे, क्योंकि उन्होंने पिछले 5 सालों में नियमों को लागू करने के लिए कुछ नहीं किया।

कोर्ट ने कहा, आवारा कुत्तों को खाना खिलाने वालों की भी जिम्मेदारी तय की जाएगी। अगर आपको इन जानवरों से इतना प्यार है, तो इन्हें अपने घर क्यों नहीं ले जाते।

ये कुत्ते सड़कों पर क्यों घूमते

रहें, लोगों को काटें और डराएं। उन्हें हम ऐसे ही नहीं छोड़ सकते। जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस संदीप मेहता और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने कहा, कुत्तों में एक खास तरह का वायरस होता है, जिसका कोई इलाज नहीं है। अब तक चार दिन की सुनवाई में इमोशन सिर्फ कुत्तों के लिए ही दिख रही है। जब कुत्ते 9 साल के बच्चे पर हमला करते हैं तो उसका जिम्मेदार कौन होगा। क्या हम इसपर आंखें मूंद लें। इस मामले में अब अगली सुनवाई 20 जनवरी को दोपहर 2 बजे से होगी।

पालतू जानवर रखना चाहते हैं, तो लाइसेंस लें

जस्टिस मेहता ने कहा- अगर कोई आवारा कुत्ता किसी पर हमला कर दे तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी। इस पर वकील ने कहा- स्वयंसेवी संस्थाओं के लिए जिम्मेदारी तय की जा सकती है। जस्टिस मेहता ने कहा- आवारा कुत्ता किसी के कब्जे में नहीं होना चाहिए। अगर आप पालतू जानवर रखना चाहते हैं, तो लाइसेंस लें। एडवोकेट गुरुस्वामी ने कहा-कुत्तों को मारना और नसबंदी करना दोनों ही कारगर नहीं हैं। जब हम किसी प्रजाति को विलुप्त करने की बात करते हैं, तो हम अपने साथ भी कुछ गलत कर रहे होते हैं। हम करुणा नहीं छोड़ रह सकते। कोई भी तर्क क्रूरता और पशुओं को मारने को जायज नहीं ठहराता।

अब 10 मिनट में नहीं मिलेगी डिलीवरी, लग गया ब्रेक

गिग वर्कर्स के लिए सरकार ने हटाई टाइम लिमिट वाली शर्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर के गिग वर्कर्स की हड़ताल का एक बड़ा असर हुआ है। अब आमलोगों को 10 मिनट के अंदर डिलीवरी की सुविधा नहीं मिल सकेगी। सरकार ने डिलीवरी ब्यॉज की सुरक्षा को देखते हुए इस टाइम लिमिट की शर्त हटा दी है। श्रम मंत्री मनसुख मंडाविया के हस्तक्षेप के बाद क्विक ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ब्लिंकिट ने अपने सभी ब्रांड से 10 मिनट में डिलीवरी का दावा हटा दिया है। सूत्रों के मुताबिक, क्विक कॉमर्स कंपनी ब्लिंकिट जल्द ही अपने विज्ञापनों और प्रचार सामग्री से भी 10 मिनट में डिलीवरी' का दावा हटाने जा रही है।

ब्लिंकिट के बाद बाकी अन्य कंपनियों की ओर से भी जल्द ही इस तरह का ऐलान किया जा सकता है। केंद्रीय श्रम मंत्री ने ब्लिंकिट के अलावा जेप्टो, स्विगी और जोमैटो जैसी कंपनियों के प्रतिनिधियों से भी बात की है और उन्हें भी डिलीवरी ब्यॉज की सुरक्षा को प्राथमिकता देने का निर्देश दिया है। यह फैसला सरकार के हस्तक्षेप और डिलीवरी कर्मचारियों की सुरक्षा को लेकर बढ़ती चिंताओं के बाद लिया गया है।

डिलीवरी ब्यॉज पर अनावश्यक दबाव और बोझ था

केंद्रीय श्रम मंत्री मनसुख मंडाविया ने इस मामले में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने बड़ी कंपनियों के अधिकारियों के साथ बैठकें कीं और उनसे कहा कि वे अपने ब्रांड प्रचार में तय समय सीमा वाली डिलीवरी का उल्लेख न करें। सरकार की चिंता यह है कि बहुत कम समय में डिलीवरी का वादा डिलीवरी कर्मचारियों पर अनावश्यक दबाव डाल सकता है और उनकी सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है। बता दें कि गिग वर्कर्स के संगठन ने इस क्षेत्र में काम करने वाले लोगों की स्थितियों, डिलीवरी के दबाव और सोशल सिक्योरिटी की कमी जैसे मुद्दे उठाए थे। सूत्रों ने बताया कि '10 मिनट डिलीवरी' का टैग हटाने का मतलब यह नहीं है कि अब डिलीवरी देर से होगी। बल्कि कंपनियां अब अपने प्रचार में निश्चित समय का वादा करने से बचेंगी, ताकि कर्मचारियों पर असुरक्षित तरीके से काम करने का दबाव न बने। विशेषज्ञों का मानना है कि यह फैसला क्विक कॉमर्स सेक्टर में एक बड़ा बदलाव दिखाता है, जहां प्रतिस्पर्धा के बावजूद अब कर्मचारी सुरक्षा और नियामक चिंताओं को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

अब समंदर में भी नहीं बचेंगे भारत के दुश्मन

नेवी की एआईपी से लैस पनडुब्बियां बनेंगी काल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की समुद्री सुरक्षा को अभूतपूर्व मजबूती देने वाली एक ऐतिहासिक डील होने वाली है। प्रोजेक्ट 75(आई) के तहत भारतीय नौसेना को छह अत्याधुनिक स्टील्थ पारंपरिक पनडुब्बियां मिलने जा रही हैं। इनका निर्माण जर्मनी की थिसेनक्रुप मरीन सिस्टम्स के साथ साझेदारी में मुंबई स्थित मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में किया जाएगा। यह मेगा डील लगभग 8 बिलियन डॉलर (करीब 72,000 करोड़ रुपये) की है, जो भारतीय रक्षा इतिहास की सबसे बड़ी पनडुब्बी परियोजनाओं में से एक है। बता दें कि जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज इस वक्त भारत की यात्रा पर हैं। रक्षा सूत्रों के अनुसार, मर्ज की इस यात्रा के दौरान अंतिम अनुबंध पर हस्ताक्षर होने की संभावना नहीं है, लेकिन अगले तीन महीनों में इसे पूरा किया जा सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पूरा कॉन्ट्रैक्ट मार्च 2026 तक साइन होने की उम्मीद

है। मझगांव डॉकयार्ड में ही बनेंगी पनडुब्बियां: इन पनडुब्बियों की सबसे बड़ी खासियत एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन तकनीक है, जिसकी बदौलत ये लंबे समय तक बिना सतह पर आए समुद्र की गहराइयों में ऑपरेट कर सकेंगी। यही उन्नत तकनीक इस प्रोजेक्ट के इतने लंबे समय तक अटके रहने का मुख्य कारण रही। दरअसल, भारतीय नौसेना ऐसी पनडुब्बियां चाहती थीं जो ज्यादा स्टील्थ वाली हों, कम शोर पैदा करें और दुश्मन की नजरों से लंबे समय तक छिपी रह सकें। इतना ही नहीं, ये छह पनडुब्बियां पूरी तरह भारत में मझगांव डॉकयार्ड में ही बनेंगी, जिससे 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को मजबूत बढ़ावा मिलेगा। जर्मनी की तकनीकी विशेषज्ञता और भारत की निर्माण क्षमता का यह संयोजन भारतीय नौसेना को रणनीतिक बढ़त देगा। वहीं, विशेषज्ञों का मानना है कि इन स्टील्थ पनडुब्बियों के शामिल होने से हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री निगरानी, प्रतिरोधक क्षमता और रणनीतिक संतुलन और मजबूत होगा।

बढ़ती वैश्विक चुनौतियों के बीच यह प्रोजेक्ट भारत के रक्षा तंत्र को पहले से कहीं अधिक मजबूत साबित होगा। टीओआई की रिपोर्ट के अनुसार, पी 75(आई) के तहत आने वाली ये नई पीढ़ी की पनडुब्बियां प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के साथ आएंगी।

हथियार बनाते हैं खतरनाक

रिपोर्ट्स के अनुसार, कंपनी के साथ साझेदारी में बनने वाली इन पी-75(आई) पनडुब्बियों को शुरू से ही एआईपी के साथ-साथ भूमि-हमला क्रूज मिसाइलों और अन्य अगली पीढ़ी की तकनीकों को शामिल करने के लिए डिजाइन किया गया है। एआईपी वाली पनडुब्बियां सिर्फ लंबे समय तक छिपे रहने के लिए ही नहीं जानी जातीं, बल्कि इनमें लगे हथियार इन्हें और खतरनाक बनाते हैं। मुख्य हथियार टॉरपीडो होते हैं, जो आमतौर पर 533 मिमी कैलिबर के भारी वजन वाले होते हैं। इनका इस्तेमाल दुश्मन की पनडुब्बियों और बड़े सतह युद्धपोतों को निशाना बनाने के लिए किया जाता है।

कुख्यात राजू ईरानी भोपाल पुलिस को कर रहा गुमराह

पूछताछ में बोला-2017 के बाद कोई वारदात नहीं की

भोपाल। भोपाल के कुख्यात ईरानी डेरे का प्रमुख राजू ईरानी पूछताछ में चौंकाने वाले खुलासे कर रहा है। उसने पुलिस को बताया कि वह अधिकांश वारदातें भोपाल के बाहर करता था। फरारी के दौरान वह नर्मदापुरम, सूरत और मुंबई जाया करता था। पुलिस को यह भी बताया कि 2017 के बाद उसने किसी भी प्रकार की लूट और ठगी की वारदात को अंजाम नहीं दिया है। डेरे में ही

रहने वाले कुछ परिवारों से उसका लंबे समय से मनमुटाव है, लिहाजा उसका नाम कई अपराधों में झूठे तौर पर दर्ज कराए जाने का वह दावा कर रहा है। वहीं पुलिस का मानना है कि स्वयं को निर्दोष बताने के लिए आरोपी लगातार गुमराह कर रहा है। पुलिस के अनुसार, राजू बेहद शातिर किस्म का अपराधी है और पूछताछ से बचने के लिए मनगढ़ंत कहानियां गढ़ रहा है। निशातपुरा थाने के प्रभारी मनोज पटवा के मुताबिक, राजू से डोजियर भरवाया गया है, जिसमें उसके परिवार के सदस्यों सहित करीबी रिश्तेदारों की जानकारी दर्ज की गई है। फरारी के दौरान राजू की मदद करने वालों की जानकारी भी जुटाई जा रही है, ताकि अपराधियों को संरक्षण देने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई की जा सके।

ट्रेन से सूरत तक पहुंचा था राजू ईरानी- राजू ईरानी ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि वह ट्रेन के रास्ते सूरत तक पहुंचा था। पकड़ा न जाए, इसके लिए उसने मोबाइल फोन घर पर ही छोड़ दिया था। चूंकि सूरत में उसका ससुराल है, इसलिए उसे वहां आसानी से पनाह मिल गई थी। राजू ईरानी जानवरों को पालने का बेहद शौकीन है। उसने अपने फार्महाउस में लड़ाकू मुर्गे, मेंढ़े और घोड़े पाल रखे हैं। राजू के पालतू मेंढ़े और मुर्गे कई प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा ले चुके हैं। बता दें कि राजू ईरानी 17 जनवरी तक पुलिस रिमांड पर है।

एमपी 10वीं-12वीं बोर्ड परीक्षा का टाइमटेबल बदला

भोपाल। मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल (MPBSE) ने वर्ष 2026 की 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षाओं का संशोधित टाइमटेबल जारी कर दिया है। नए शेड्यूल में दोनों कक्षाओं की परीक्षाओं की तारीखों के साथ कुछ विषयों के क्रम में भी बदलाव किया गया है। बोर्ड ने सभी स्कूलों को संशोधित कार्यक्रम तुरंत विद्यार्थियों तक पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। संशोधित टाइमटेबल के अनुसार 10वीं कक्षा का हिंदी का पेपर, जो पहले 11 फरवरी को प्रस्तावित था, अब 6 मार्च 2026 को होगा। इसी तरह 12वीं के उर्दू और मराठी विषयों की परीक्षा 9 फरवरी की जगह अब 6 मार्च को आयोजित की जाएगी। 12वीं का हिंदी का पेपर 7 फरवरी की बजाय 7 मार्च 2026 को होगा। सभी परीक्षाएं सुबह 9:00 से 12:00 बजे तक आयोजित होंगी। संशोधित कार्यक्रम के अनुसार कक्षा 12वीं की परीक्षाएं 10 फरवरी 2026 से शुरू होंगी। बोर्ड ने सभी स्कूलों को निर्देश दिए हैं कि संशोधित टाइमटेबल को नोटिस बोर्ड, मॉर्निंग असेंबली और अभिभावक समूहों के माध्यम से तुरंत प्रसारित किया जाए।

विधानसभा अध्यक्ष ने बुलाई सीएम,मंत्रियों की बैठक

विधायकों के वेतन भत्ते, आवासों को लेकर हुई चर्चा

ई-विधान अगले सत्र से होगा लागू, मीटिंग में फैसला

भोपाल। विधानसभा में आज विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और तीन मंत्रियों को बुलाया। तोमर द्वारा बुलाई गई बैठक में सीएम यादव के अलावा संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा और राजेंद्र शुक्ल भी मौजूद रहे। बैठक में विधायकों के वेतन भत्ते और विश्राम गृह के अलावा विधानसभा से जुड़े अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की गई है। मंगलवार को विधानसभा अध्यक्ष तोमर की अध्यक्षता में विधानसभा अध्यक्ष के कक्ष में हुई इस बैठक में सीएम सचिवालय के अपर सचिव नीरज मंडलोई, प्रमुख सचिव लोक निर्माण विभाग सुखवीर सिंह और विधानसभा के प्रमुख सचिव अरविन्द शर्मा भी शामिल हुए। बताया जाता है कि विधायकों के वेतन भत्तों के लिए बनाई गई कमेटी ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। शीतकालीन सत्र में विधायकों का दबाव था कि उनका वेतन भत्ता बढ़ाने का फैसला किया जाए, लेकिन तब सरकार निर्णय नहीं ले पाई थी। अब जबकि एक माह बाद फरवरी के अंतिम सप्ताह में बजट सत्र शुरू हो सकता है तो सरकार इस मामले में अंतिम फैसला ले सकती है और कैबिनेट ने प्रस्ताव मंजूर किए जाने के बाद विधानसभा में लाकर इसे मंजूरी दी जा सकती है। इसके अलावा विधायक विश्राम गृह कैम्पस में विधायकों के लिए बनाए जा रहे आवासों को लेकर भी बैठक में चर्चा की गई है। मोहन सरकार ई कैबिनेट व्यवस्था लागू कर चुकी है और आज और पिछले मंगलवार को हुई कैबिनेट बैठक में टैबलेट के साथ मंत्री और सचिव को ई कैबिनेट प्रक्रिया से परिचित कराया जा चुका है। अब बजट सत्र से विधानसभा में ई विधान लागू किया जा सकता है। हालांकि इसे पिछले साल जून से ही लागू किए जाने की तैयारी थी, लेकिन इसका काम समय पर पूरा नहीं होने के चलते पहले पावस सत्र और फिर शीतकालीन सत्र में इसे लागू नहीं किया जा सका। अब बजट सत्र से ई विधान लागू किए जाने की तैयारी है।

धान खरीदी में गड़बड़ी पर 6 कर्मचारियों पर कार्रवाई

बालाघाट में 3 निलंबित, 3 पर एफआईआर के निर्देश

बालाघाट। बालाघाट में धान खरीदी में गड़बड़ी और लापरवाही के आरोप में 6 कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। इनमें से तीन को निलंबित किया गया है, जबकि तीन के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए गए हैं। इस कार्रवाई को लेकर सहकारी कर्मचारी महासंघ ने नाराजगी जताई है। सहकारी कर्मचारी महासंघ के जिलाध्यक्ष पी.सी. चौहान ने इस कार्रवाई को 'खेदजनक' बताया। उन्होंने कहा कि अगर ऐसी जांच की जाए तो हर केंद्र पर चूक दिखाई देगी। चौहान ने यह भी सवाल उठाया कि सोसायटियों में धान के परिवहन में हो रही देरी पर क्या कार्रवाई

की जा रही है। कर्मचारियों पर हुई कार्रवाई के विरोध में रणनीति बनाने के लिए 15 जनवरी को बालाघाट मुख्यालय में कर्मचारियों की एक बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में आगे की रणनीति पर चर्चा की जाएगी। जिले में 1 दिसंबर से धान उपार्जन का काम चल रहा है। अब तक समर्थन मूल्य पर 55 लाख 57 हजार क्विंटल धान की खरीदी हो चुकी है। हालांकि, इसमें से 10 लाख क्विंटल से अधिक धान का परिवहन अभी तक नहीं हो पाया है और वह सोसायटियों में पड़ा हुआ है। कलेक्टर मृणाल मीणा ने धान खरीदी में अनियमितता की जांच रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की है। सेवा सहकारी समिति कंजई के प्रबंधक बाबूलाल ठाकरे, उपार्जन केंद्र प्रभारी खूबचंद ऐड़े और कंप्यूटर ऑपरेटर गणेश शरणागत को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। जांच टीम ने पाया कि कंजई केंद्र में 57 क्विंटल धान अधिक था। इसके अलावा, तौल कर रखी गई बोरियों पर स्टेंसिल और किसान कोड नहीं पाए गए, और अमानक स्तर की धान खरीदी गई थी। कलेक्टर ने इन निलंबित कर्मचारियों के वेतन से शासन को हुई क्षति की राशि वसूल करने के भी आदेश दिए हैं। समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के दौरान किसानों से निर्धारित मात्रा से अधिक धान की तौल करने के मामले में किरनापुर विकासखंड के सेवती केंद्र प्रभारी दामोदर पांचे, परसवाड़ा विकासखंड के मजगांव केंद्र प्रभारी सुनील चौधरी और बोदा केंद्र के प्रभारी ओमकार ऐड़े के खिलाफ थाने में एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए गए हैं।

प्रदेश में दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान का चलाया जाएगा तीसरा चरण

पशुपालन एवं डेयरी प्रमुख सचिव श्री उमराव ने कृषक कल्याण वर्ष 2026 में आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की समीक्षा की

भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी प्रमुख सचिव उमाकांत उमराव ने मंगलवार को कृषक कल्याण वर्ष-2026 के अंतर्गत विभाग द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों की विस्तार से समीक्षा की। साथ ही योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, लक्ष्य आधारित कार्यप्रणाली तथा पशुपालकों तक योजनाओं का लाभ सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में पशुपालन एंव डेयरी विभाग, म.प्र. गो संवर्धन बोर्ड व सांची बोर्ड के अधिकारियों ने कृषक कल्याण वर्ष-2026 में किए जाने वाले कार्यों के बारे में प्रजेंटेशन के माध्यम से जानकारी दी।

प्रमुख सचिव श्री उमराव ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने और पशुपालकों को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए नस्ल सुधार, पशु पोषण, पशु स्वास्थ्य एवं डेयरी विकास से संबंधित कार्यक्रमों को प्राथमिकता के साथ समयबद्ध रूप से लागू किया जाए, जिससे पशुपालकों की आय में निरंतर वृद्धि हो सके। प्रदेश में पशुपालकों की आय बढ़ाने एवं दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान का तीसरा चरण जल्द ही संचालित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान अंतर्गत दो चरणों में 12 लाख से अधिक पशुपालको के घर पहुंचकर सीधा संवाद किया गया। उन्हें पशुओं के नस्ल सुधार, पशु पोषण व पशु स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया गया। तीसरे चरण में प्रदेश में 3 से 4 पशुओं का पालन करने वाले पशुपालकों से सीधा संवाद किया जाएगा। उन्हें भी पशुओं के नस्ल सुधार, पशु पोषण व पशु स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया जाएगा। बैठक में प्रमुख सचिव ने स्वावलंबी गोशाला नीति 2025, डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना, डेयरी विस्तार, सहकारी समितियों के गठन के साथ ही मुर्गीपालन, बकरी पालन के माध्यम से पशुपालकों की आय बढ़ाने के संबंध में चर्चा की।

तीन चरणों में संचालित की जा रही क्षीरधारा ग्राम योजना

पशुपालन एवं डेयरी प्रमुख सचिव श्री उमराव ने बताया कि प्रदेश के कई ग्रामों में संस्थागत एवं व्यक्तिगत प्रयासों से नस्ल सुधार कार्यक्रम प्रभावी रूप से क्रियान्वित हो रहे हैं, जिससे पशुपालक उन्नत नस्ल का पशुपालन कर अधिक दुग्ध उत्पादन कर रहे हैं। ऐसे ग्रामों को आदर्श उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने तथा अन्य ग्रामों को प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रदेश में क्षीरधारा ग्राम योजना शुरू की गई है। यह तीन चरणों में संचालित होगी। पहले चरण में प्रदेश के 5 हजार से अधिक गांवों को चुना गया है। इस योजना के माध्यम से दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने, उन्नत पशुपालन को प्रोत्साहित करने तथा पशु स्वास्थ्य एवं पोषण सुनिश्चित करते हुए ग्राम स्तर पर समग्र दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए पशुपालकों को जागरूक किया जाएगा।

चाइनीज मांझे से मौत पर अब गैर-इरादतन हत्या का केस

बच्चे पकड़ाए तो माता-पिता जिम्मेदार, हाईकोर्ट ने कहा-बैन के बावजूद घटनाएं दुर्भाग्यपूर्ण

इंदौर। चाइनीज मांझे से हो रही मौतों को लेकर हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। सोमवार को हुई सुनवाई में कोर्ट ने कहा कि प्रतिबंध के बावजूद लगातार जानलेवा घटनाएं होना दुर्भाग्यपूर्ण है और इसे रोकने के लिए कड़ी कार्रवाई जरूरी है। कोर्ट ने निर्देश दिए कि चाइनीज मांझे से यदि किसी की मौत होती है, तो संबंधित व्यक्ति के खिलाफ बीएनएस की धारा 106(1) के तहत गैर-इरादतन हत्या का मामला दर्ज किया जाएगा। हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया कि यदि कोई व्यक्ति चाइनीज मांझा बेचते या उसका उपयोग करते पाया जाता है, तो उसके खिलाफ सीधे आपराधिक कार्रवाई होगी। साथ ही यदि नाबालिग चाइनीज मांझे का उपयोग करते पकड़े जाते हैं, तो उनके अभिभावकों को जिम्मेदार मानते हुए उनके खिलाफ भी प्रकरण दर्ज किया जाएगा। कोर्ट ने बताया कि इंदौर में बीते कुछ महीनों में चाइनीज मांझे से तीन लोगों की मौत हो चुकी है। इसके अलावा कई लोग घायल हुए हैं और बड़ी संख्या में पक्षी भी इसकी चपेट

में आकर मारे गए हैं। कोर्ट ने कहा कि 14 जनवरी को मकर संक्रांति है और इस दौरान पतंगबाजी बढ़ जाती है, जिससे प्रतिबंधित मांझे के उपयोग से बड़े हादसों की आशंका बनी रहती है। सुनवाई के दौरान न्यायमित्र सीनियर एडवोकेट विवेक शरण और आकाश शर्मा ने सुझाव दिया कि मकर संक्रांति को देखते हुए इंदौर और हाईकोर्ट की सीमा में आने वाले 14 जिलों से उठाए गए कदमों और कार्ययोजना की रिपोर्ट तलब की जाए।

चेतन बनकर होटल में हिंदू युवती के साथ ठहरा अशरफ

यूपीआई ट्रांजेक्शन से हुआ खुलासा, दो आधार कार्ड में एक ही फोटो, नाम-पता अलग-अलग

मंदसौर। मंदसौर में बस स्टैंड के पास स्थित एक होटल में राजस्थान का रहने वाला अशरफ नाम का युवक पहचान छिपाकर हिंदू युवती के साथ ठहरा था। अशरफ ने अपना नाम चेतन बताया था। आधार कार्ड में भी नाम चेतन था। उसका ये झूठ यूपीआई ट्रांजैक्शन में पकड़ा गया। होटल संचालक अशोक मारू ने भुगतान से जुड़े यूपीआई ट्रांजैक्शन की जांच की तो जिस खाते से 600 की राशि आई थी, वह अशरफ खान नाम से थी। जबकि होटल में दर्ज पहचान हिंदू नाम चेतन प्रकाश की थी। इसी विरोधाभास के चलते होटल संचालक को संदेह हुआ। रात के वक्त जब दोनों होटल लौटे तो होटल संचालक ने उनसे पूछताछ की। इस दौरान युवक के पास से एक और आधार कार्ड मिला, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि उसने फर्जी पहचान के जरिए होटल में ठहरने की कोशिश की थी। इसके बाद होटल संचालक ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने उससे

पूछताछ की और गिरफ्तार कर लिया।

हिंदू नाम के आधार पर लिया था होटल रूम- पुलिस के अनुसार आरोपी की पहचान अशरफ खान निवासी जैसलमेर (राजस्थान) के रूप में हुई है। वह अपनी हिंदू गर्लफ्रेंड के साथ होटल राज में चेतन प्रकाश नाम के आधार कार्ड के जरिए रुका हुआ था। जांच में आरोपी के पास दो आधार कार्ड मिले। दोनों में फोटो तो एक ही था, लेकिन नाम और पते अलग-अलग दर्ज थे। दोनों आधार कार्ड राजस्थान के बताए जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि अशरफ लैब टेक्नीशियन की परीक्षा देने के लिए अपनी गर्लफ्रेंड के साथ मंदसौर आया था। परीक्षा श्रीजी कॉलेज में थी। इसीलिए दोनों ने सुबह होटल राज में रूम लिया और परीक्षा देने चले गए। युवती राजस्थान के नागौर जिले की रहने वाली बताई जा रही है। दोनों जोधपुर के एक अस्पताल में नर्सिंग स्टाफ के रूप में काम करते हैं। सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को थाने ले जाकर पूछताछ की। पुलिस ने आरोपी अशरफ के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 318(4) सहित अन्य संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। थाना प्रभारी पुष्पेंद्र सिंह राठौर ने बताया कि दोनों के परिजन को भी सूचना दे दी गई है। पुलिस पूरे मामले की तफ्तीश कर रही है। शुरुआती पूछताछ में सामने आया है कि युवक को आशंका थी कि मुस्लिम नाम से हिंदू युवती के साथ होटल में ठहरने पर परेशानी हो सकती है। इसलिए उसने हिंदू नाम वाले फर्जी आधार कार्ड का इस्तेमाल किया। हालांकि होटल संचालक ने युवक की इस चालाकी को पकड़ लिया।

बैटरी रिक्शा से उतरते ही युवक की थमी सांसें

देवदूत बनकर आए सब-इंस्पेक्टर ने 45 सेकंड में दी 'नई जिंदगी'

भोपाल। राजधानी भोपाल के नादरा बस स्टैंड चौराहे पर सोमवार को एक ऐसा चमत्कार हुआ, जिसे देख वहां मौजूद हर शख्स की आंखें भर आईं। हनुमानगंज थाने में पदस्थ सब इंस्पेक्टर विवेक शर्मा ने अपनी सूझबूझ और त्वरित एक्शन से एक युवक को 'नई जिंदगी' दी

है। चलती सड़क पर अचानक मौत के करीब पहुंचे युवक के लिए यह पुलिस अधिकारी किसी मसीहा से कम साबित नहीं हुआ। घटना उस वक्त की है जब सब इंस्पेक्टर विवेक शर्मा नादरा बस स्टैंड पर यातायात और सुरक्षा व्यवस्था संभाल रहे थे। तभी उनकी नजर एक युवक पर पड़ी जो बैटरी रिक्शा से उतरते ही अचानक बेसुध होकर सड़क पर गिर पड़ा। युवक के साथ मौजूद उसका दोस्त बुरी तरह घबरा गया। युवक की पहचान पंजाब (लुधियाना-जालंधर) निवासी गुलाब सिंह के रूप में हुई। विवेक शर्मा ने देखा कि गिरने के बाद युवक के शरीर में कोई हलचल नहीं थी और उसकी सांसें थम सी गई थीं। एक पल की भी देरी जानलेवा हो सकती थी।

मैरिज रजिस्ट्रेशन फीस घटेगी, सिंगल नल कनेक्शन भी मिल सकेंगे

भोपाल नगर निगम की बैठक में प्रस्ताव पारित, गोमांस के मुद्दे पर कांग्रेस का वॉक आउट

भोपाल। भोपाल नगर निगम परिषद की बैठक में शहर से जुड़े तीन अहम प्रस्ताव बहुमत से पारित किए गए। बैठक में मुख्य रूप से जल कनेक्शन व्यवस्था, विवाह पंजीयन शुल्क और अमृत 2.0 योजना पर विचार किया गया। कॉलोनियों में बल्क कनेक्शन की जगह सिंगल यानी व्यक्तिगत नल कनेक्शन देने का प्रस्ताव रखा गया है। प्रस्ताव के अनुसार, 70 प्रतिशत से अधिक लोगों की सहमति मिलने पर कॉलोनियों में व्यक्तिगत कनेक्शन दिए जाएंगे। इससे पानी सस्ता पड़ेगा और बिल से जुड़ी परेशानियां कम होंगी। विवाह पंजीयन शुल्क में बड़ी राहत देने का प्रस्ताव रखा गया है। अब 30 दिन के भीतर आवेदन करने पर रजिस्ट्रेशन फीस सिर्फ 130 रुपए लगेगी। पहले विलंब शुल्क मिलाकर राशि 5 हजार रुपए तक जाती थी। 30 दिन बाद आवेदन करने पर अधिकतम शुल्क 1100 रुपए ही देना होगा। अमृत 2.0 योजना के तहत शहर में जलप्रदाय और सीवरेज से जुड़े बड़े प्रोजेक्ट प्रस्तावित हैं। इसमें केंद्र और राज्य सरकार की हिस्सेदारी के साथ कुछ राशि ग्रीन म्युनिसिपल बॉन्ड के जरिए जुटाई जाएगी। स्लॉटर हाउस में गोमांस मिलने के मुद्दे पर बैठक में जमकर हंगामा हुआ। कांग्रेस पार्षद पोस्टर लेकर सदन में पहुंचे

और महापौर व एमआईसी से इस्तीफा मांगा। भोजन अवकाश के बाद दोबारा शुरू हुई बैठक में कांग्रेस पार्षदों ने विरोध जताते हुए सदन से वॉकआउट किया। बीजेपी पार्षद देवेंद्र भार्गव ने जैकेट पर कागज चस्पा कर गोमांस का विरोध किया। बीजेपी के वरिष्ठ पार्षद सुरेंद्र बाठिका और पप्पू विलास घाड़गे समेत कई पार्षदों ने आपत्ति जताई। एमआईसी सदस्य आरके सिंह बघेल ने दोषियों पर सख्त कार्रवाई और उच्च स्तरीय समिति गठन की मांग की। बैठक के समानांतर हिंदू संगठन सड़क पर उतरकर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बताया कि नगर निगम के पशु चिकित्सक बेनी प्रसाद गौर को निलंबित करने के निर्देश दिए गए हैं। भोपाल नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने कहा कि आज की बैठक में यह स्पष्ट हुआ कि स्लॉटर हाउस के संचालन की कोई आवश्यकता नहीं है। हम भोपाल को मांस की मंडी नहीं बनने देंगे। इसी कारण स्लॉटर हाउस को स्थायी रूप से बंद करने के निर्देश आयुक्त को दिए गए हैं। इसके साथ ही वर्तमान मामले में जो भी दोषी हैं, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए गए हैं। एमआईसी सदस्य रविन्द्र यति ने सदन में कहा, 11 कर्मचारियों पर कार्रवाई होनी चाहिए। इनमें अब्दुल खान, रहमान खान मोहम्मद खान, फरीद खान, राजा खान, सलीम और वसीम खान समेत 11 कर्मचारियों के खिलाफ एक्शन हो। मध्य विधानसभा के नेता को बचाया जा रहा है। आधे घंटे निगम की बैठक स्थगित रही। बैठक दोबारा शुरू हुई तो एमआईसी पर कार्रवाई की मांग को लेकर कांग्रेस पार्षद अध्यक्ष की आसंदी के सामने आ गए। बीजेपी पार्षद ने भी विरोध जताया। वे सामने बैठक कर गो हत्या करने वालों को फांसी की सजा देने की मांग करने लगे।

संपादकीय

चायनीज मांझे से उभरा संकट

मकर संक्रांति जैसे पर्वों पर आकाश में उड़ती पतंगें भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रही हैं। लेकिन, चायनीज मांझे ने इस खुशी को खौफनाक संकट में बदल दिया है। प्लास्टिक और कांच के लेप से बना यह मांझा न केवल इंसानों की जान ले रहा है, बल्कि पक्षियों और पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचा रहा है। प्रतिबंध के बावजूद इसकी बिक्री और उपयोग जारी है, जो प्रशासनिक लापरवाही को उजागर करता है। चायनीज मांझा अपनी असाधारण तीक्ष्णता के कारण बाइक सवारों की गर्दनें काट देता है, पैदल यात्रियों के शरीर को चीर देता है और उड़ते पक्षियों को मार गिराता है। मध्य प्रदेश में पिछले पांच वर्षों में इससे 70 लोग घायल हुए और आठ की मौत हो चुकी, जिसमें इंदौर जैसे शहर भी शामिल हैं। उत्तर प्रदेश के मेरठ में यह काला कारोबार फल-फूल रहा है, जहां डेढ़ करोड़ रुपये मूल्य का मांझा जब्त होने के बावजूद सप्लाई दूसरे राज्यों तक पहुंच रही है। दिल्ली में हाल के 25 दिनों में चार मौतें दर्ज हो चुकी हैं, जो इसकी घातकता को प्रमाणित करती हैं। सरकारें समय-समय पर चायनीज मांझे पर प्रतिबंध लगाती हैं। छत्तीसगढ़ में जनवरी 2026 में नया आदेश जारी हुआ, राजस्थान और मध्य प्रदेश में भी कार्रवाई के दावे हैं। फिर भी, मकर संक्रांति से पहले बाजारों में यह खुलेआम बिकता है। मेरठ जैसे शहर चायनीज मांझे का गढ़ बन चुके हैं, जहां खुली बिक्री और अवैध उत्पादन प्रशासन की नाकामयाबी दिखाता है। इंदौर, उज्जैन, पन्ना और बुरहानपुर में जब्ती अभियान होते हैं, लेकिन जागरूकता की कमी से समस्या बनी रहती है। यह मांझा केवल मानवीय हादसों तक सीमित नहीं है, लाखों पक्षी भी इसका शिकार हो रहे हैं। कबूतर, चील और कौवे आसमान से गिरकर दम तोड़ रहे हैं, जो जैव विविधता के लिए खतरा है। परंपरागत सूती मांझा अब विलुप्ति के कगार पर है, जिससे बरेली के देसी उद्योग को नुकसान हो रहा है। सामाजिक स्तर पर यह लापरवाही और लालच का प्रतीक है, जहां उत्सव की आड़ में व्यापारी जान जोखिम में डाल रहे हैं। स्कूलों में जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, लेकिन प्रभाव नगण्य है। संकट से निपटने के लिए कठोर कदम जरूरी हैं। पहला, पूरे देश में एक समान सख्त कानून लागू कर जब्त मांझे पर भारी जुर्माना और लंबी सजा सुनिश्चित की जाए। दूसरा, सूती मांझे को बढ़ावा देकर देसी उत्पादकों को संरक्षण दें, जैसा बरेली जैसे केंद्रों में संभव है। तीसरा, मकर संक्रांति से पहले व्यापक जागरूकता अभियान चलाएं। स्कूलों, कॉलोनियों और बाजारों में सुरक्षित पतंगबाजी का प्रचार करें। प्रशासनिक तंत्र को सक्रिय रखें, ताकि प्रतिबंध केवल कागजी न रहे। सामाजिक संगठन सुरक्षित विकल्पों को प्रोत्साहित करें। चायनीज मांझे का संकट अब महामारी का रूप ले चुका है, जिसे रोकना सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि समय रहते कार्रवाई न हुई, तो उत्सवों की रौनक खून से सन जाएगी। परंपरा को बचाने के लिए आधुनिक खतरों से लड़ना होगा, वरना आने वाली पीढ़ियां इसे यादगार हादसों के रूप में ही जानेंगी।

क्या ईरान के लिये अब परमाणु परीक्षण जरूरी हो गया है ?

नजरिया

तनवीर जाफ़री

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

वेनेज़ुएला पर की गयी ग़ैर क़ानूनी अमेरिकी कार्रवाई कई संकेतों की ओर इशारा कर रही है। एक तो यह कि क्या यह विश्व की उदारवादी सोच रखने वाली ताक़तों को विश्व की पूंजीवादी व अतिवादी व्यवस्था की ओर से दी जाने वाली यह एक सीधी चुनौती है ? ग़ौरतलब है कि ट्रंप परिवार की गिनती भी अमेरिका के बड़े पूंजीवादी घरानों में की जाती है या फिर यह चीन व रूस जैसे देशों एक साथ ललकारने की ट्रंप की नीति का हिस्सा है ? और अब कोलंबिया, क्यूबा, मैक्सिको और ईरान जैसे देशों पर अमेरिकी सैन्य या आर्थिक दबाव की आशंका व्यक्त की जा रही है। साथ ही अमेरिका द्वारा ग्रीनलैंड पर भी अधिग्रहण की धमकी दी जा चुकी है।

पिछले दिनों अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप के निर्देश पर जिस तरह वेनेज़ुएला पर सैन्य कार्रवाई करते हुये अमेरिकी सेना ने वेनेज़ुएला की राजधानी कराकस से वहां के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो व उनकी पत्नी का बलात अपहरण कर उन्हें न्यूयार्क ले जाया गया उसने पूरी दुनिया को न केवल अचंभे में डाल दिया है बल्कि इस घटना ने एक नई विश्व व्यवस्था व नये वैश्विक शक्ति संतुलन के गठन की संभावना को भी प्रबल कर दिया है। कितना आश्चर्य है कि नोबल शांति पुरस्कार की चाहत रखने वाले राष्ट्रपति ट्रंप अमेरिकी शक्तियों का दुरुपयोग कर इस दुनिया को जंगल राज की तरह चलाना चाह रहे हैं ?

वेनेज़ुएला पर की गयी ग़ैर क़ानूनी अमेरिकी कार्रवाई कई संकेतों की ओर इशारा कर रही है। एक तो यह कि क्या यह विश्व की उदारवादी सोच रखने वाली ताक़तों को विश्व की पूंजीवादी व अतिवादी व्यवस्था की ओर से दी जाने वाली यह एक सीधी चुनौती है? ग़ौरतलब है कि ट्रंप परिवार की गिनती भी अमेरिका के बड़े पूंजीवादी घरानों में की जाती है। या फिर यह चीन व रूस जैसे देशों एक साथ ललकारने की ट्रंप की नीति का हिस्सा है ? और अब कोलंबिया, क्यूबा, मैक्सिको और ईरान जैसे देशों पर अमेरिकी सैन्य या आर्थिक दबाव की आशंका व्यक्त की जा रही है।साथ ही अमेरिका द्वारा ग्रीनलैंड पर भी अधिग्रहण की धमकी दी जा चुकी है।

ऐसे में दुनिया के सामने दो ही विकल्प बचे हैं एक तो यह कि दूसरे देशों की स्वतंत्रता व संप्रभुता का सम्मान करने वाले सभी देश वेनेज़ुएला पर अमेरिकी सैन्य कार्रवाई का विरोध करते हुये हर स्तर पर एकजुट होकर अमेरिका का मुक़ाबला करें। दूसरा यह कि 'जिसकी लाठी उसी की भैंस' वाली अमेरिकी नीति का ही अनुसरण करते हुये पूरी दुनिया ही जंगल राज में बदल जाये। हर ताक़तवर देश अपनी पड़ोसी कमज़ोर देश को निगलने की मानवता व न्याय विरोधी रक्तरंजित योजना पर काम करे। उदाहरण के तौर पर चीन ताइवान को हड़प ले और रूस यूक्रेन पर अपना आधिपत्य स्थापित कर ले? इजराइल, फ़िलिस्तीन लेबनान सीरिया पर नियंत्रण कर अपने वृहत्तर इजराइल के नापाक मंसूबे पर आगे बढ़े? और इन्हीं ख़तरनाक संभावनाओं के बीच एक उपाय यह भी है कि ईरान परमाणु परीक्षण के द्वारा उत्तर कोरिया की तरह एक ऐसी आत्म रक्षक व 'निवारक' रणनीति पर काम करे जो अमेरिका को भी युद्ध से पीछे हटने पर मजबूर कर दे तो क्या लंबे समय से चले आ रहे तमाम ईरान विरोधी प्रतिबंधों के बावजूद उस के सामने इस समय वैसी ही स्थिति पैदा हो चुकी है कि आत्मरक्षा के लिये अब उसे परमाणु संपन्न देशों के क्लब में शामिल होना ज़रूरी हो गया है ?

ग़ौर तलब है कि गत 13 जून - 24 जून 2025 के मध्य चला बारह दिवसीय ईरान-इज़राइल युद्ध उस समय

शुरू हुआ था जब इज़राइल ने ईरान के कई सैन्य और परमाणु ठिकानों पर बमबारी की थी और ईरान के कई प्रमुख सैन्य अधिकारियों, परमाणु वैज्ञानिकों व प्रमुख राजनेताओं की हत्या कर दी थी साथ ही अनेक नागरिकों को भी मार दिया था। इज़राइल ने उस समय ईरान की वायु सुरक्षा को भी नुक़्सान पहुँचाया था और कई जगह तो इसे पूरी तरह नष्ट भी कर दिया था। इतना ही नहीं बल्कि अमेरिका ने भी इस्राईल के समर्थन में 22 जून को तीन ईरानी परमाणु स्थलों पर बमबारी की। परन्तु बाद में मुंहतोड़ जवाबी कार्रवाई करते हुये ईरान ने 550 से अधिक बैलिस्टिक मिसाइलों और 1,000 से अधिक आत्मघाती ड्रोनों के साथ बड़े पैमाने पर इजराइल में राजधानी तेल अवीव सहित कई शहरों पर भीषण हमले किये।

कम से कम बारह सैन्य, ऊर्जा और सरकारी स्थलों को निशाना बनाया। यहाँ तक कि कई अमेरिकी सैन्य लक्ष्यों को भी निशाना बनाया। उस दौरान भी पश्चिमी मीडिया ईरानी सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामनेई को लेकर बार बार तरह तरह की अफ़वाह उड़ा रहा था। कभी उन्हें भूमिगत बता देता था तो कभी उनके ईरान छोड़कर भाग जाने की ख़बर फैला देता था। उस समय भी आयतुल्लाह ख़ामनेई जनता को संबोधित करने के लिये सार्वजनिक रूप से दिखाई देते थे और पिछले दिनों भी बिल्कुल वैसा ही दृश्य देखने को मिला। इस बार भी 'भूमिगत' होने व 'मास्को भागने की तैयारी' जैसी अफ़वाहों के बीच गत शुक्रवार को पुनः आयतुल्लाह ख़ामनेई जनता के सामने आये तथा बेख़ौफ़ होकर खुद अमेरिका को ही हिदायत व नसीहत करते सुने गए।

परन्तु ट्रंप के नेतृत्व वाला वर्तमान अमेरिका वेनेज़ुएला की घटना के बाद तो पूरी तरह बेनक़ाब हो चुका है। दुनिया में सबसे अधिक तेल भण्डार रखने वाले अमेरिका को विश्व के अन्य तेल उत्पादक देशों से अपनी शर्तों पर तेल चाहिये। चाहे इसके लिये कोई भी बहाना बनाकर किसी राष्ट्रपति का अपहरण तक क्यों न करना पड़े। ज़ाहिर है ईरान भी वेनेज़ुएला की ही तरह दुनिया के उन गिने चुने तेल उत्पादक देशों में एक है जो अमेरिका को 'सर्वशक्तिमान' भी नहीं मानता और न ही उसकी 'वैश्विक थानेदारी' को स्वीकार करता है। जबकि 1979 की ईरानी इस्लामिक क्रांति से पहले का रज़ा शाह पहलवी का ईरानी शासन अमेरिका का पिट्ठू शासन था। उसी समय से ईरान न केवल अमेरिकी बल्कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा लगाये गयी अनेक प्रतिबंध भी झेलता आ रहा है जोकि निश्चित रूप से ईरान की अर्थव्यवस्था को बेहद कमज़ोर कर रहा है। इन प्रतिबंधों के बावजूद अपने अत्यंत सीमित संसाधनों के बल पर ईरान ने शिक्षा,विज्ञान यहाँ तक कि अंतरिक्ष विज्ञान तक के क्षेत्र में जो तरक़्क़ी की है उसी की झलक गत वर्ष के बारह दिवसीय ईरान-इज़राइल युद्ध में भी देखने को मिली।

परन्तु अब बात इस्राईल की नहीं बल्कि ईरान को सीधे अमेरिका चुनौती दे रहा है। ईरान में चल रहे सरकार विरोधी व अमेरिका -इजराइल समर्थित प्रदर्शनों को लेकर अमेरिका ने ईरान को चेतावनी दी है कि यदि प्रदर्शनकारियों को मारा गया तो अमेरिका ईरान पर बड़े हमले करेगा। ऐसे में ईरान,अमेरिकी हमलों से बचने के लिये आख़िर कौन सी रणनीति अपना सकता है ? क्या ईरान द्वारा परमाणु परीक्षण किया जाना भी इन्हीं संभावनाओं में एक सबसे प्रमुख है? क्या निकट भविष्य में ईरान भी परमाणु परीक्षण कर 'परमाणु क्लब' में शामिल हो जाएगा ताकि अमेरिका व इज़राइल जैसे देशों को सैन्य हमले से रोका जा सके ? यदि ईरान में उपजे सत्ता विरोधी प्रदर्शनों के बीच ईरान रूस और चीन जैसे सहयोगी देशों की मदद से परमाणु परीक्षण करता है तो इससे ईरान की जनता में सुरक्षा,स्वाभिमान तथा राष्ट्रवाद बढ़ेगा तो बढ़ेगा ही साथ ही वहां आंतरिक राष्ट्रीय एकता भी बढ़ेगी। इसके अलावा ईरान का क्षेत्रीय प्रभाव भी बढ़ेगा साथ ही अमेरिकी एकध्रुवीयता का विरोध करने वाले देशों को भी मज़बूती मिलेगी। इसके अलावा दशकों से अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण दबाव का सामना करती आ रही ईरान की अर्थव्यवस्था में इस परीक्षण से जैसीपीओए के रूप में कई नई संभावनाएँ भी खुल सकती हैं। वैसे भी उत्तर कोरिया द्वारा किये गये परमाणु परीक्षण के बाद ही ट्रंप - की उत्तर कोरिया राष्ट्रपति किम जोंग के साथ 27-28 फ़रवरी 2019 को वेतनाम के हनोई में मुलाक़ात हुई थी। गोया आज की दुनिया में ख़ासकर अमेरिकी वर्चस्व वाली दुनिया में यदि किसी देश को अपना अस्तित्व बचाकर रखना है तो उसका परमाणु संपन्न देश होना ज़रूरी हो चुका है। अन्यथा कभी भी इराक़-वेनेज़ुएला-ग़ज़ा-सीरिया-लेबनान यानी कहीं भी कुछ भी हो सकता है?

हाथी और मानव के बीच बढ़ता संघर्ष

पर्यावरण

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आजकल समूचे देश में वन्यजीवों और मनुष्यों के बीच संघर्ष बढ़ता दिखाई दे रहा है। झारखंड में एक पखवाड़े के भीतर मात्र एक हाथी ने 22 लोगों को मर गिराया। इसी तरह उत्तराखंड में वन्यजीवों ने साल 2025 में 45 लोगों की और उत्तरप्रदेश में 60 लोगों को मर डाला। मध्य-प्रदेश और छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय उद्यान क्षेत्रों के इर्दगिर्द निरंतर हाथियों और मानवों के बीच संघर्ष छिड़े रहने की खबरें आ रही हैं। हाथियों की असामयिक मौतें होती हैं तो मौत का ठीकरा वनाधिकारी किसानों पर फोड़ देते हैं। मध्यप्रदेश के उमरिया जिले के उद्यान में जब भी हाथी या बाघों की मौत होती है तो हाथियों की मौत को जहर खिलाना और बाघों की मौत को आपसी संघर्ष में मरना बताकर वन विभाग अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेता है। दो साल पहले हाथियों के गुस्से के शिकार उद्यान से 10 किमी दूर देवरा गांव के ग्रामीण हुए थे। 13 हाथियों के एक झुंड से तीन हाथी अलग हुए और देवरा ग्राम पहुंचकर तीन लोगों को मार दिया था। इस मदांध हाथी को बाद में वनकर्मियों ने पकड़ लिया। यह हाथी उन्माद (मुस्थ) की अवस्था में था। इस अवस्था का मतलब होता है कि हाथी प्रजनन काल से गुजर रहा है। इस अवधी में इसके शरीर में टेस्टास्टेरान का स्तर बढ़ने लगता है और यह आक्रामक हो जाता है। ऐसे में यह आक्रामक हो जाता है।

भारत सरकार ने हाथी को दुर्लभ प्राणी व राष्ट्रीय धरोहर मानते हुए इसे वन्य जीव सरंक्षण अधिनियम 1972 की अनुसूची-1 में सूचीबद्ध करके कानूनी सुरक्षा दी हुई है। इसलिए जंगलों में हाथियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। हालांकि हमारी सनातन संस्कृति में हाथी सह-जीवन का हिस्सा है। इसीलिए हाथी पाले और पूजे जाते हैं। असम के जंगलों में हाथी लकड़ी ढुलाई का काम करते हैं। सर्कस के खिलाड़ी और सड़कों पर तमाशा दिखाने वाले मदारी इन्हें पढ़ा व सिखाकर अजूबे दिखाने का काम भी करते रहे हैं। साधु-संत और सेनाओं ने भी हाथियों का खूब उपयोग किया है। कई उद्यानों में पर्यटकों को हाथी की पीठ पर बिठाकर बाघ के दर्शन कराए जाते हैं। वन संरक्षण अधिनियम लागू होने के बाद अब ये केवल प्राणी उद्यानों और चिड़ियाघरों में ही सिमट गए हैं। बावजूद इन उद्यानों में इसकी हड्डियों और दातों के लिए खूब शिकार हो रहा है। हाथी के शिकार पर प्रतिबंध है, लेकिन व्यवहार में हाथी का शिकार करने वालों से लेकर आम लोग भी इस तरह के कानूनों की परवाह नहीं करते ? कर्नाटक के जंगलों में कुख्यात तस्कर वीरप्पन ने इसके दांतों की तस्करी के लिए सैंकड़ों हाथियों को मारा था। चीन हाथी दांत का सबसे बड़ा खरीददार है। जिन जंगलों के बीच में रेल पटरियां बिछी हैं, वहां ये रेलों की चपेट में आकर भी बड़ी संख्या में प्राण गंवाते

रहते हैं। उत्तराखंड में हाल ही में 10 हाथी रेल की चपेट में आकर मारे गए हैं।

मनुष्य के जंगली व्यवहार के विपरीत हाथियों का भी मनुष्य के प्रति क्रूर आचरण देखने में आता है। जैसा कि बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य-प्रदेश और कर्नाटक के जंगली हाथी अक्सर जंगल से भटककर ग्रामीण इलाकों में उत्पात मचाते रहते हैं। कुछ साल पहले छत्तीसगढ़ में हाथियों ने इतना भयानक उत्पात मचाया था कि यहां 22 निर्दोष आदिवासियों की जान ले ली थी। कर्नाटक और बिहार में इन हाथियों द्वारा मारे गए लोगों की संख्या जोड़ लें तो ये हाथी दस-बारह साल के भीतर करीब सवा-सौ लोगों की जान ले चुके हैं। शहडोल, रायगढ़, सरगुजा जिलों के दूर-दराज के गांवों में रहने वाले आदिवासियों के घरों में उतारी जाने वाली शराब को पीने की तड़प में भी हाथी गंध के सहारे आदिवासियों की झोंपड़ियों को तोड़ते हुए घुसते चले जाते हैं और जो भी सामने आता है उसे सूंड से पकड़ कर पटका और पेट पर भारी-भरकम पैर रख उसकी जीवन लीला खत्म कर देते हैं। इस तरह से इन मदांध हाथियों द्वारा हत्या का सिलसिला हर साल अनेक गांवों में देखने में आता रहता है।

पालतू हाथी भी कई बार गुस्से में आ जाते हैं। ये गुस्से में क्यों आते हैं, इसे समझने के लिए इनके आचार, व्यवहार और प्रजनन संबंधी क्रियाओं व भावनाओं को समझना जरूरी है। हाथी मद की अवस्था में आने के बाद ही मदांध होकर अपना आपा खोता है। हाथियों की इस मनस्थिति के सिलसिले में प्रसिद्ध वन्य प्राणी विशेषज्ञ रमेश बेदी ने लिखा है कि जब हाथी प्रजनन की अवस्था में आता है तो वह समागम के लिए मादा को ढूंढता है। ऐसी अवस्था में पालतू नर हाथियों को लोगों के बीच नहीं ले जाना चाहिए। मद में आने से पूर्व हाथी संकेत भी देते हैं। हाथियों की आंखों से तेल जैसे तरल पदार्थ का रिसाव होने लगता है और उनके पैर पेशाब से गीले रहने लगते हैं। ऐसी स्थिति में महावतों को चाहिए कि वे हाथियों को भीड़ वाले इलाके से दूर बंदी अवस्था में ही रखें, क्योंकि अन्य मादा प्राणियों की तरह रजस्वला स्त्रियों से एस्ट्रोजन हार्मोन्स की महक उठती है और हाथी ऐसे में बेकाबू होकर उन्मादित हो उठते हैं। त्रिचूर, मैसूर और वाराणसी में ऐसे हालातों के चलते अनेक घटनाएं, घट चुकी हैं। ये प्राणी मनोविज्ञान की ऐसी ही मनस्थितियों से उपजी घटनाएं हैं। वैसे हाथियों के ऐसे व्यवहार को लेकर काफी नासमझी की स्थिति है, मगर समझदारी इसी में है कि धन के लालच में मद में आए हाथी को किसी उत्सव या समारोह में न ले जाया जाए।

उत्पाती हाथियों को पकड़कर बीस साल पहले मध्य-प्रदेश में 'ऑपरेशन खेदा' चलाया गया था। हालांकि पूर्ण वयस्क हो चुके हाथियों को पालतू बनाना एक चुनौती व जोखिम भरा काम है। हाथियों को बाल्यावस्था में ही आसानी से पालतू बनाया जा सकता है। हाथी देखने में भले ही सीधा और भोला लगे पर आदमी की जान के लिए जो सबसे ज्यादा खतरनाक प्राणी हैं, उनमें एक हाथी है और दूसरा है भालू है। हाथी उत्तेजित हो जाए तो उसे संभालना मुश्किल होता है। फिलहाल इस तरह हाथी को पालतू बनाए जाने के उपाय बंद हैं। आखिर, जिस वन अमले पर अरबों रुपए का बजट सालभर में खर्च होता है, उसके पास इस समस्या से निपटने के लिए कोई कारगर उपाय क्यों नहीं है ? अतएव हाथियों की मौत हो या वे उत्पात मचाएं, मरना ग्रामीणों का ही होता है,जो कमोबेश निर्दोष होते हैं।

जान जान की कीमत में अंतर होता है शांतिबाबू

कटाक्ष

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

यकीन मानिए भाईसाहब, अठारह लाख रूपए प्लस तीन साल के ब्याज का नुकसान हो गया अपन की फेमेली को। रीसेंटली भागीरथपुरे का पानी पी के मरे हैं अपन, मुआवज़ा मिला दो लाख। जो लोग तीन साल पहले मोरबी के पुल से गुजरते हुए मरे उनको मिला था बीस लाख। अठारह लाख का सीधासट्ट लॉस। पहले पता होता तो अपन भी यमराज को रिक्वेस्ट करके वहीं जा के मर लेते। वैसे भी तीन साल ज्यादा जी के कर क्या लिया अपन ने? घरवालों की जान खाते रहे, खाना खर्चा बढ़ाया सो अलग। यमदूत ने भाँप लिया कि मेरे मन में क्या चल रहा है। वह बोला - 'जीवन की अवधि तय है शांतिबाबू। रिक्वेस्ट करके कुछ हफ़्तों-महीनों का एडजस्टमेंट हो भी जाता, मगर तीन साल पहले कैसे ले जाते हम तुम्हें?'

मैंने कहा - 'तो फिर गुजरात के गंभीरा पुल के गिरने में ले जाना था। अभी जुलाई, 2025 में ही गिरा है। उधर मरने वाले को छह लाख मिले। भले मोरबी से सत्तर परसेंट कम मिलता मगर वह भी इंदौर के से तो तीन सौ परसेंट ज्यादा ही होता। मिलने को तो एक करोड़ भी मिल सकते थे जो अपन एयर इंडिया के हादसे में अहमदाबाद में मरते।'

'ये मुँह और मसूर की दाल ! मुंसीपाल्टी के बम्बे का पानी पीने वालों को मुआवज़े करोड़ों में नहीं मिला करते।'

'अच्छा एक बात तो बताओ। जो लोग एयर इंडिया के हादसे में मरे उनको भी तुम इसी बूढ़े भैंसे पर ले कर गए थे ! उनके लिए वन्दे-भारत भैंसा एक्सप्रेस जैसी अलग से कोई वीआईपी फेसेलिटी नहीं है तुम्हारे पास, पीठ पर एसी फस्ट-क्लास कूपे टाइप लगा हुआ हो कुछ?' - मैंने पूछा।

'तुम्हारे निज़ाम की तरह हम जान जान की कीमत में अंतर नहीं किया करते, शांतिबाबू। इहलोक से आत्मा निकाल लेने के बाद हर जान का मोल एक बराबर है। आत्माएँ तो हम मुंबई की लोकल ट्रेन में लटककर मरने वालों की भी ले जाते हैं, कुपोषण से मरनेवालों की भी, बिहार की बाढ़ में बहकर मरनेवालों की भी, पूस की रात फुटपाथ पर ठण्ड से या जेठ कि दुपहरी में मजदूरी करते करते लू से मरनोंवालों की भी ले जाते हैं। कभी एक धेला मुआवज़ा भी मिला है इनमें से किसी को? तुम्हारे निज़ाम में ख़ामोश हादसों में मरनेवालों को मुआवज़े नहीं मिला करते। वे उन्हीं मामलों में मिला करते हैं जिनमें मिडिया में हो-हल्ला मच जाता है। जितना हल्ला ज्यादा उतना मुआवज़ा ज्यादा।'

कमाल का यमदूत था वो। आया परलोक से था मगर हमारे सिस्टम के बारे में हम से ज्यादा जानता था। उसी ने रेखांकित किया - 'आर्यावर्त में मनुष्य की जिंदगी का मोल बस कुछेक लाख रुपए रह गया है। हर बड़ी आपदा के बाद अनुग्रह राशि पर घोषित कर के गंगा नहा लेता है शासन प्रशासन। जवाबदेही किसी की नहीं। निज़ाम है कि अपने मरे हुए नागरिकों की गिनती रुपयों में करता है।'

मैं क्या कहता ! बस इतना और पूछ लिया - 'जो मुझे नरक अलॉट हुआ तो खाने पीने की बैवस्था कैसी रहेगी?'

'बेफिक्र रहो। एक बार मर लिए हो, अब वहाँ कुपोषण से तो नहीं ही मरोगे और पानी भागीरथपुरे से ज्यादा साफ़ आएगा। कढ़ाई में, जिस तेल में तुम तले जाओगे शांतिबाबू, वो मिलावटी नहीं होगा। कभी सुने हो नरक के किसी स्कूल में मिड-डे मील खाकर पचास शिशु आत्माएँ अवधि पूरी होने से पहले ही गुजर गईं। नरक है तो क्या ! हर मुलाज़िम की एक की जवाबदेही तय है। यमलोक का लॉ ऑफ़ टॉर्ट्स अर्यावार्त के क़ानून जितना लचर नहीं है। तुम्हारे देश में ऐसे हादसों के किसी जिम्मेदार ओहदेदार को सज़ा हुई है कभी?' वह मुझे निरुत्तर करके अंतरिक्ष में प्रवेश कर गया।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विश्व पुस्तक मेला में कवयित्री मिस चुलबुली

व्यंग्य

प्रभाशंकर उपाध्याय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

विश्व पुस्तक मेला कई मायनों में विश्वस्तरीय सिद्ध हुआ है। इसने अनेक कीर्तिमान कायम कर दिए है। नई पुस्तकों के प्रकाशन का तो कदाचित रिकार्ड ही टूट गया है। जिस तेजी से तथा जिस मात्रा में पुस्तकें बरस रही हैं, उसे देख कर लग रहा है कि शीघ्र ही देश की आधी आबादी लेखक या कवि बन कर रहेगी। सरकारें खुश हो सकती हैं कि बेरोजगारी की आधी समस्या तो सॉल्व होने वाली है। कबाड़ी भी प्रसन्नता के सागर में गोते लगा सकते हैं कि उनका भविष्य नितांत उज्जवल रहने की संभावनाएं नज़र आ रही हैं।

मुझे लगता है कि विमोचनीय क्रिया में भी हम विश्व में अग्रणी ही हैं। अहो...क्या दृश्य है- विमोचनकर्ताओं के सैलाब-दर-सैलाब उमड़ रहे हैं। यत्र-तत्र-सर्वत्र बड़े बड़े केरी बेग थामे ऐसी शख्सियतें मंडरा रही हैं। कुछ अपने घुटनों की वजह से लंगड़ा रहे हैं तो कुछ भेंट मिली किताबों के बोझ से। बुक स्टालों पर इतने विमोचनकर्मी एकत्र हो गए हैं कि स्थान, कैमरे की रेंज और पुस्तकें कम पड़ गयी हैं। अभी प्रकाशक ने सीमित प्रतियां ही छापी हैं। शेष अगले संस्करण में छपेंगी। कदाचित, इसीलिए दूसरा संस्करण अति शीघ्र आ जाता है। चलो, प्रतियां कम है तो क्या?, समस्त उपस्थित सम्मानीयों ने अपने कर-कमल स्पर्श करवा दिए हैं, ज्यों पूजा में पूजक अधिक होने पर पंडितजी सबको हाथ लगवा देते हैं। खैर, कैमरे की जद में आने के लिए, तिरछा या बांका हुआ जा रहा है। कुछ पीछे दब गए हैं, वे गर्दन उचका कर ही कृतार्थ हो रहे हैं।

सोशल मीडिया पर भी पोस्ट दनादन बरस रही हैं। एक सज्जन की तो गद्य और काव्य विधा को मिलाकर तीस किताबें के जन्म और उनके नाडीच्छेदन (विमोचन) की सूचना ने तहलका मचा दिया है। संभवतः, यह भी पुस्तक मेले का एक रिकॉर्ड ही होगा? अब, तो लाइक का बटन दबाते तथा बधाई देते देते, अंगुलियां और आंखें दर्द करने लगी हैं। गर्दन और कंधे आराम की गुहार करने लगे हैं। स्वयं और मोबाइल सेट को विश्राम देने की सोच ही रहा था कि एक पोस्ट दनाक से कूदी। मेरे शहर की उदीयमान कवियत्री मिस चुलबुली की एक पोस्ट उदित हुई। उनकी कल सायं विमोचित हुई पुस्तक को मुरादाबाद में एक पुरस्कार मिल गया था। चुलबुली मुस्कराते हुए अपना सम्मान ग्रहण कर रही थी। अहा...'होनहार बिरवान के होत चीकने पात...' वाली उक्ति याद आ गयी।

किन्तु मन में एक शंका ने जंप मारा। मिस चुलबुली ने जाने से पहले पुस्तक मेले में अपना चार दिन का कार्यक्रम बताया था। फिर वह और उसकी किताब दूसरे दिन अपनी मुराद पूरी करवाने मुरादाबाद कैसे पहुंच गयी? मैं फुनियाया, ''कहां हो इस समय?''

''सर ! पुस्तक मेले में।''

''फिर मुरादाबाद में सम्मान?''

चुलबुली खिलखिलायी, ''अभी लेखक मंच के मंच पर हूं, बाद में बात करती हूं।''

मिस चुलबुली का कॉल नहीं आया और रात भर मेरा मन उस चट मंगनी पट ब्याह के तिलस्म में चुलबुलाता रहा। दूसरे दिन सायं तक अपनी उत्सुक्तता पर बमुश्किल काबू किए रहा फिर चुलबुली का नंबर डॉयल किया। नो रिप्लाई। तीसरे दिन भी वही हाल। अलबत्ता, उसकी पोस्ट बता रही थी कि उस काव्य संकलन की दो समीक्षाएं और विमोचन के कुछ समाचार अखबारों में अवश्य छपे हैं।

पांचवें दिन, यह सोचकर कि सम्मानीय कवियत्री लौट चुकी होगी उसके घर पहुंचा। मुझे देखते ही चहकी, ''आइए, सर !''

उसने सफाई दी, ''सॉरी...सर, आपसे बात करने का टाइम ही नहीं मिला। काफी बिजी शिड्यूल रहा।''

मैंने कहा, ''कोई बात नहीं पहले मुरादाबादी खबर का खुलासा करो।''

वह खिलखिलायी, ''सर ! आपसे क्या छुपाना। यह बात मेले में इसलिए नहीं बता सकी कि आस पास बहुत से लोग होते हैं। अपना मेला महान है, सर। वहां सब अरेंज हो जाता है, बस पर्स में दम होना चाहिए। मुझसे गलती यह हुई कि पुरस्कार की खबर मैंने, अतिउत्साह में दूसरे ही दिन डाल दी। जबकि मुझे हफ्ते दो हफ्ते ठहरना चाहिए था। आखिरकार, नई हूं ना। आप जैसा मार्गदर्शक तो वहां नहीं था।''

सेहत

ममता कुशवाहा

लेखक शिक्षिका हैं।

डीजल का धुआं : मस्तिष्क पर मंडराता अदृश्य खतरा

डीज़ल का धुआँ कई हानिकारक गैसों और अत्यंत सूक्ष्म कणों का मिश्रण होता है। इसमें ब्लैक कार्बन, नाइट्रोजन ऑक्साइड और पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन जैसे तत्व शामिल होते हैं। ये कण इतने छोटे होते हैं कि सांस के साथ शरीर के अंदर गहराई तक प्रवेश कर जाते हैं। जब इन्हें साँस के जरिए अंदर लिया जाता है, तो ये केवल फेफड़ों तक ही सीमित नहीं रहते, बल्कि रक्त प्रवाह में शामिल होकर पूरे शरीर में फैल जाते हैं। हैरानी की बात यह है कि ये कण रक्त-मस्तिष्क अवरोध को भी पार कर सकते हैं, जो सामान्यत: मस्तिष्क को हानिकारक तत्वों से बचाने का काम करता है। यही कारण है कि डीज़ल के कण मस्तिष्क के लिए विशेष रूप से खतरनाक माने जाते हैं।

डीज़ल से निकलने वाला धुआँ लंबे समय से वायु प्रदूषण और सांस संबंधी बीमारियों का एक बड़ा कारण माना जाता रहा है, लेकिन हाल के वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि इसके दुष्प्रभाव केवल फेफड़ों तक सीमित नहीं हैं। बढ़ते प्रमाण यह संकेत देते हैं कि डीज़ल के धुएँ के लंबे समय तक संपर्क में रहने से मस्तिष्क की कार्यक्षमता कमजोर हो सकती है, तंत्रिका तंत्र का संतुलन बिगड़ सकता है और कई प्रकार के न्यूरोलॉजिकल तथा संज्ञानात्मक रोगों का खतरा बढ़ सकता है। दुनिया भर में तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण और वाहनों की संख्या के कारण यह समझना अत्यंत आवश्यक हो गया है कि डीज़ल उत्सर्जन और मस्तिष्क स्वास्थ्य के बीच क्या संबंध है, क्योंकि यह अब एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बन चुका है।

डीज़ल का धुआँ कई हानिकारक गैसों और अत्यंत सूक्ष्म कणों का मिश्रण होता है। इसमें ब्लैक कार्बन, नाइट्रोजन ऑक्साइड और पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन जैसे तत्व शामिल होते हैं। ये कण इतने छोटे होते हैं कि सांस के साथ शरीर के अंदर गहराई तक प्रवेश कर जाते हैं। जब इन्हें साँस के जरिए अंदर लिया जाता है, तो ये केवल फेफड़ों तक ही सीमित नहीं रहते, बल्कि रक्त प्रवाह में शामिल होकर पूरे शरीर में फैल जाते हैं। हैरानी की बात यह है कि ये कण रक्त-मस्तिष्क अवरोध को भी पार कर सकते हैं, जो सामान्यतः मस्तिष्क को हानिकारक तत्वों से बचाने का काम करता है। यही कारण है कि डीज़ल के कण मस्तिष्क के लिए विशेष रूप से खतरनाक माने जाते हैं।

डीज़ल के धुएँ का मस्तिष्क पर सबसे गंभीर प्रभाव माइक्रोग्लिया नामक कोशिकाओं पर पड़ता है। माइक्रोग्लिया मस्तिष्क की प्रमुख प्रतिरक्षा कोशिकाएँ होती हैं और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये कोशिकाएँ संक्रमण से मस्तिष्क की रक्षा करती हैं, मृत या क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को साफ करती हैं और मस्तिष्क के आंतरिक संतुलन को बनाए रखने में मदद करती हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि डीज़ल के धुएँ में मौजूद सूक्ष्म कण माइक्रोग्लिया की सामान्य कार्यप्रणाली को बाधित कर सकते हैं। जब इन कोशिकाओं का कामकाज प्रभावित होता है, तो मस्तिष्क से विषैले तत्वों को हटाने और सूजन को नियंत्रित करने की उनकी क्षमता कम हो जाती है, जिससे मस्तिष्क अधिक क्षति के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

लंबे समय तक डीज़ल प्रदूषण के संपर्क में रहने से मस्तिष्क में लगातार सूजन की स्थिति पैदा हो सकती है, जिसे न्यूरोइन्फ्लेमेशन कहा जाता है। सामान्य परिस्थितियों में थोड़ी देर की सूजन शरीर की एक प्राकृतिक सुरक्षा प्रक्रिया होती है, लेकिन जब यह सूजन लंबे समय तक बनी रहती है, तो यह मस्तिष्क की कोशिकाओं को नुकसान पहुँचा सकती है और तंत्रिका नेटवर्क को कमजोर कर सकती है। इसके परिणामस्वरूप याददाश्त कमजोर होना, सोचने-समझने की क्षमता में कमी और सीखने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है। बच्चों के लिए यह खतरा और भी अधिक है, क्योंकि उनका मस्तिष्क अभी विकास की अवस्था में होता है। ऐसे में डीज़ल प्रदूषण उनके बौद्धिक विकास, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता और व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

प्रयोगशालाओं और वास्तविक जीवन दोनों में किए गए वैज्ञानिक अध्ययनों ने इन चिंताओं की पुष्टि की है। मानव स्टेम सेल से विकसित माइक्रोग्लिया कोशिकाओं पर किए गए प्रयोगों में यह पाया गया कि डीज़ल के कण प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया और कोशिकीय सफाई से जुड़े जीनों की गतिविधि को बदल सकते हैं। वहीं, शहरी क्षेत्रों में किए गए जनसंख्या आधारित अध्ययनों में यह देखा गया है कि जिन इलाकों में यातायात से होने वाला वायु प्रदूषण अधिक है, वहाँ न्यूरोलॉजिकल समस्याओं की दर भी ज्यादा पाई जाती है। ये निष्कर्ष इस बात का संकेत हैं कि डीज़ल धुएँ के प्रभाव केवल सैद्धांतिक नहीं हैं, बल्कि वे पहले से ही मानव स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं।

डीज़ल प्रदूषण और न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों के बीच संबंध भी एक गंभीर चिंता का विषय है। अल्ज़ाइमर और पार्किंसन जैसी बीमारियों में मस्तिष्क में क्षतिग्रस्त प्रोटीन जमा होने लगते हैं और धीरे-धीरे तंत्रिका कोशिकाएँ नष्ट होने लगती हैं। चूँकि माइक्रोग्लिया इन हानिकारक प्रोटीनों को हटाने में अहम भूमिका निभाती हैं, इसलिए डीज़ल के धुएँ से उनकी कार्यक्षमता कम होने पर इन बीमारियों की प्रगति तेज़ हो सकती है। शोधकर्ताओं का मानना है कि यातायात से जुड़े वायु प्रदूषण के लंबे समय तक संपर्क में रहने से बुजुर्गों में ऐसे रोगों का जोखिम बढ़ सकता है।

डीज़ल उत्सर्जन का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है। बढ़ते प्रमाण यह दर्शाते हैं कि वायु प्रदूषण का संबंध तनाव, चिंता और अवसाद जैसी मानसिक समस्याओं से भी है। डीज़ल कणों के कारण होने वाली सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव मस्तिष्क के उन रसायनों को प्रभावित कर सकते हैं जो हमारे मूड और भावनात्मक संतुलन को नियंत्रित करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि डीज़ल धुएँ का असर केवल शारीरिक मस्तिष्क क्षति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है।

यह समझना भी आवश्यक है कि सभी डीज़ल इंजन समान रूप से हानिकारक नहीं होते। पुराने डीज़ल इंजन, जिनमें आधुनिक उत्सर्जन नियंत्रण तकनीकें नहीं होतीं, कहीं अधिक मात्रा में विषैले कण छोड़ते हैं। इसके विपरीत, नए डीज़ल इंजन जो यूरो-6 जैसे कड़े मानकों का पालन करते हैं, उन्नत फिल्टर और एग्ज़ॉस्ट उपचार प्रणालियों के कारण अपेक्षाकृत कम प्रदूषण करते हैं। फिर भी, आधुनिक तकनीक के बावजूद डीज़ल उत्सर्जन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है और लंबे समय में इसके संयुक्त प्रभाव चिंता का कारण बने हुए हैं।

घनी आबादी वाले शहरों में यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है, जहाँ ट्रैफिक जाम के कारण लाखों लोग रोज़ाना डीज़ल प्रदूषण के संपर्क में रहते हैं। जो लोग व्यस्त सड़कों के पास रहते हैं, परिवहन से जुड़े काम करते हैं या लंबे समय तक यात्रा करते हैं, वे अधिक जोखिम में होते हैं। अक्सर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को अधिक प्रदूषित इलाकों में रहना पड़ता है, जिससे यह समस्या केवल पर्यावरणीय ही नहीं बल्कि सामाजिक न्याय से भी जुड़ जाती है।

डीज़ल धुएँ से होने वाले न्यूरोलॉजिकल जोखिमों से निपटने के लिए कई स्तरों पर ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। सरकारों को सख्त उत्सर्जन नियम लागू करने, स्वच्छ ईंधन विकल्पों को बढ़ावा देने और टिकाऊ सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों में निवेश करने की जरूरत है। इलेक्ट्रिक वाहनों और नवीकरणीय ऊर्जा की ओर बढ़ना डीज़ल पर निर्भरता को कम कर सकता है और वायु प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी ला सकता है। इसके साथ ही, शहरी नियोजन में ट्रैफिक कम करने और हरित क्षेत्रों को बढ़ाने जैसे उपाय भी सहायक हो सकते हैं।

व्यक्तिगत स्तर पर भी जागरूकता बेहद जरूरी है। लोग जहाँ संभव हो, भारी ट्रैफिक वाले इलाकों से बचने, घरों में एयर प्यूरीफायर का उपयोग करने और स्वच्छ हवा से जुड़ी नीतियों का समर्थन करने जैसे कदम उठा सकते हैं। बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों जैसे संवेदनशील वर्गों के लिए ये उपाय और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उनका मस्तिष्क या तो विकासशील अवस्था में होता है या अधिक संवेदनशील होता है।

इस तरह से यह कहा जा सकता है कि डीज़ल का धुआँ मस्तिष्क स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा है। यह मस्तिष्क की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर करता है, लंबे समय तक सूजन को बढ़ावा देता है और संज्ञानात्मक तथा न्यूरोलॉजिकल विकारों का जोखिम बढ़ाता है। जो समस्या पहले केवल श्वसन तंत्र से जुड़ी मानी जाती थी, वह अब मस्तिष्क के लिए एक मूक लेकिन खतरनाक हमलावर के रूप में सामने आ रही है। जैसे-जैसे वैज्ञानिक समझ बढ़ रही है, यह स्पष्ट होता जा रहा है कि डीज़ल प्रदूषण को कम करना केवल स्वच्छ हवा के लिए नहीं, बल्कि बेहतर मानसिक स्वास्थ्य, मजबूत बौद्धिक क्षमता और आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए भी अनिवार्य है।

सामयिक

अजय प्रताप तिवारी

पंचायत एवं सामाजिक मामलों के जानकार

संविधान से और सशक्त हो सकते हैं गांव

संविधान की आत्मा गांवों में बसती है, क्योंकि देश की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। ऐसे में जब गांव सशक्त होंगे, तो लोकतंत्र भी मजबूत होगा। पिछले दिनों गांवों में संविधान को बढ़ावा देने के लिए पंचायती राज मंत्रालय ने देश के सभी राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में संविधान दिवस मनाने की विशेष पहल की है। ग्रामीण समुदायों में संविधान के प्रति जन-जागरूकता को बढ़ावा देने से समावेशी समाज की नीव मजबूत होगी। वास्तव में देखा जाए तो गांवों में संविधान के प्रति जागरूकता सबसे कम है। संविधान न सिर्फ हमारे मौलिक अधिकरो की रक्षा करता है, यह लोकतंत्र, समानता और न्याय को जमीनी स्तर तक पहुंचाने का माध्यम बनता है।

भारत गांवों का देश है। आज़ादी के सात दशक बीतने के बाद भी देश की बड़ी आबादी गांवों में निवास करती है। गांव केवल भौगोलिक इकाइयां नहीं हैं, बल्कि देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आत्मा हैं। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि गांवों में संविधान की ज़रूरत क्यों है और वह किस तरह ग्रामीण जीवन को सशक्त बनाता है। भारतीय संविधान केवल शासन व्यवस्थाओं को मजबूती प्रदान नहीं करता, बल्कि यह देश के सबसे अंतिम व्यक्तियों को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा जीवन के अधिकारों को संरक्षित करता है। संविधान की आत्मा गांवों में बसती है, क्योंकि देश की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। ऐसे में जब गांव सशक्त होंगे, तो लोकतंत्र भी मजबूत होगा। पिछले दिनों गांवों में संविधान को बढ़ावा देने के लिए पंचायती राज मंत्रालय ने देश के सभी राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में संविधान दिवस मनाने की विशेष पहल की है। ग्रामीण समुदायों में संविधान के प्रति जन-जागरूकता को बढ़ावा देने से समावेशी समाज की नीव मजबूत होगी। वास्तव में देखा जाए तो गांवों में संविधान के प्रति जागरूकता सबसे कम है। संविधान न सिर्फ हमारे मौलिक अधिकरो की रक्षा करता है, यह लोकतंत्र, समानता और न्याय को जमीनी स्तर तक पहुंचाने का माध्यम बनता है। संविधान यह सुनिश्चित करता है कि किसी के साथ जाति, धर्म, लिंग और आर्थिक स्थिति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा साथ ही गांवों में व्याप्त विभिन्न प्रकार की सामाजिक कुरीतियों और असमानताओं को दूर करने का महत्वपूर्ण साधन है। संविधान शिक्षा, अभिव्यक्ति, समान अवसर जैसे अधिकार गांव के नागरिकों को सशक्त बनाते हैं, वहीं कर्तव्य, सामाजिक सौहार्द्र बनाए रखने में मदद करते हैं। संविधान ने पंचायतों को संवैधानिक अधिकार देकर गांवों को अपने विकास से जुड़े फैसले स्वयं लेने का अवसर दिया है। चूंकि गांव हमारी सामाजिक व्यवस्था से लेकर अर्थव्यवस्था का आधार हैं और ये पंचायतें उनकी व्यवस्था की बुनियाद हैं तो इनकी महत्ता और बढ़ जाती है। महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज का विचार दिया था, सिर्फ राज्य और केंद्र सरकार मिलकर ही पूरा देश नहीं चला सकते, इसलिए स्थानीय प्रशासन का महत्व समझा गया। इसे नाम दिया गया पंचायती राज। भारत के गांव कितने समृद्धिशाली थे, इस तथ्य की पड़ताल यदि अतीत से करें तो पता चलता है कि ब्रिटेन का औद्योगिक साम्राज्य हमारे गांवों से लूटी गई धन संपदा की ही नींव पर खड़ा हुआ था। इस समय ग्राम पंचायतें वास्तविकता से बहुत दूर हैं।अधिकांश राज्यों में पंचायती राज नियम कायदे से नहीं चल रहे। ये सरपंच और नौकरशाही के बलबूते पर चल रहे हैं। क्या पंचायतों द्वारा सामाजिक न्याय मिल रहा है? क्या सभी जरूरतमंदों को पेंशन मिल रही है? क्या जरूरतमंदों को मकान मिल रहा है? पंचायती राज व्यवस्था भ्रष्ट हो चली है।

राशन वितरण से लेकर मकान तक के लिए जरूरतमंदों से पैसे वसूली की खबरें आम हैं। पंचायतों में ऐसे भ्रष्टाचार क्यों हो रहे हैं, इस बात की गंभीरता से पड़ताल करें तो कहीं न कहीं लोगों में अपने अधिकारों के बारे में जानकारी न होने की वजह से ऐसा हो रहा है। पंचायतों में व्याप्त भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने का एक ही सशक्त माध्यम है वह संविधान द्वारा प्रदत्त पंचायतों और लोगों के अधिकारों को बताना होगा।संविधान स्थानीय स्तर पर होने वाली दबंगई, जातिगत पंचायतों के अन्यायपूर्ण फैसलों और सत्ता के दुरुपयोग पर अंकुश लगाता है, संविधान गांवों को सिर्फ अधिकार नहीं देता, बल्कि उन्हें सम्मान, आवाज़ और विकास का रास्ता भी देता है। अब समय आ गया है कि गांवों को भी शहरों के अनुरूप विकसित किया जाए, ताकि शहरों की ओर होने वाला पलायन भी रोका जा सके। पंचायती राज व्यवस्था को स्वावलंबी बनाने के लिए हमें ऐसी व्यवस्था बनानी होगी कि इनके पास आजीविका के अपने स्वतंत्र साधन हों, ताकि इन्हें आर्थिक संकट का सामना ना करना पड़े। पंचायत प्रतिनिधियों को प्रशासन, वित्त और कानून संबंधी नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। योजनाओं के क्रियान्वयन में स्थानीय जरूरतों की प्राथमिकताओं पर जोर देना चाहिए। महिलाओं, युवाओं और वंचित वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करना होगा।

संवैधानिक दृष्टिकोण से ग्राम पंचायतों को 73वें संविधान संशोधन और 11वीं अनुसूची में वर्णित विषयों का प्रभावी हस्तांतरण पंचायतों को दिया जाना चाहिए। ग्राम सभा को निर्णय-निर्माण की केंद्रीय इकाई बनाया जाए। संवैधानिक व्यवस्था को ईमानदारी से लागू कर पंचायतों को सशक्त बनाया जा सकता है।आज जब संविधान की समीक्षा की बात की जाती है, तो केवल संविधान की ही नहीं, बल्कि लोकतंत्र की भी समीक्षा आवश्यक हो जाती है। क्योंकि आधुनिक भारत में संविधान और लोकतंत्र का जन्म एक साथ हुआ है, और दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

मकर संक्रांति

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

तिल-गुड़ की मिठास में बसा सूर्य पर्व

पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक आत्मा में रचा-बसा यह लोकपर्व आधुनिक जीवन की आपाधापी के बीच कुछ ऐसे पल रचता है, जब लोग समय की रफ्तार को थामकर अपनेपन की गर्माहट में डूब जाते हैं। पंजाबी समाज में यह उत्सव विशेष उल्लास के साथ मनाया जाता है जबकि जम्मू-कश्मीर में इसे मकर संक्रांति के समान भाव से देखा जाता है और सिंधी समाज इसे 'लाल लाही' के रूप में एक दिन पहले धूमधाम से मनाता है। लोहड़ी वस्तुत: सर्दी के कटु स्वाद को मिठास में बदल देने वाली परंपरा है, जिसमें प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे से संवाद करते हैं। इस पर्व की जड़ें लोककथाओं और आस्थाओं में इतनी गहराई तक समाई हुई हैं कि वे समय के साथ और भी समृद्ध होती चली गई। एक लोक विश्वास इसे उस प्रसंग से जोड़ता है, जब कंस ने लोहिता नामक राक्षसी को भगवान कृष्ण के वध के लिए भेजा था लेकिन बाललीला में ही श्रीकृष्ण ने उसका अंत कर दिया।

मकर संक्रांति भारतीय संस्कृति का ऐसा प्राचीन पर्व है, जिसकी जड़ें केवल धार्मिक आस्था में ही नहीं, बल्कि प्रकृति, कृषि, खगोल विज्ञान और लोकजीवन की गहरी समझ में भी समाई हुई हैं। यह पर्व मूलतः सूर्य उपासना का उत्सव है, जिसे प्रतिवर्ष 14 या 15 जनवरी को पूरे उल्लास और श्रद्धा के साथ भारत सहित अनेक देशों में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। मकर संक्रांति का महत्व इसलिए भी विशिष्ट है क्योंकि यह पर्व किसी पौराणिक कथा तक सीमित न होकर खगोलीय घटना से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। इसी दिन सूर्य धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करता है और अपनी उत्तरायण यात्रा आरंभ करता है, जिसे अंधकार से प्रकाश की ओर, निराशा से आशा की ओर और जड़ता से चेतना की ओर संक्रमण का प्रतीक माना गया है। इस वर्ष मकर संक्रांति 14 जनवरी को मनाई जा रही है।

मकर संक्रांति केवल एक तिथि नहीं, बल्कि ऋतु परिवर्तन का सजीव संकेत भी है। इसी दिन से वसंत ऋतु के आगमन की आहट मिलने लगती है। खरीफ की फसलें घरों तक पहुंच चुकी होती हैं और खेतों में रबी की फसलें लहलहाने लगती हैं। सरसों के पीले फूल खेतों में प्रकृति की मुस्कान बिखेरते हैं और किसान के श्रम का प्रतिफल उसकी आंखों के सामने साकार होने लगता है। यही कारण है कि मकर संक्रांति को देशभर में फसलों के आगमन और कृषि समृद्धि के पर्व के रूप में भी देखा जाता है। यह उत्सव किसान के लिए आशा, संतोष और भविष्य की संभावनाओं का प्रतीक बन जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसी दिन सूर्य देव अपने सात घोड़ों वाले रथ पर सवार होकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं। यह परिवर्तन केवल खगोलीय नहीं, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनिदेव से वर्षों पुरानी नाराजगी भुलाकर उनके घर गए थे, इसलिए यह पर्व पारिवारिक समरसता, क्षमा और संबंधों की पुर्नस्थापना का संदेश भी देता है। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार महाराज भगीरथ ने अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए इसी दिन तर्पण किया था, जिससे इस तिथि को पितृ तर्पण और पुण्यकर्म से भी जोड़ा गया।

खगोल विज्ञान की दृष्टि से मकर संक्रांति का महत्व अत्यंत वैज्ञानिक है। पृथ्वी की गोलाकार संरचना और उसके अक्ष पर झुके हुए भ्रमण के कारण दिन और रात की अवधि में परिवर्तन होता है। जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर बढ़ता है, तब उत्तरी गोलार्द्ध में दिन धीरे-धीरे बड़े होने लगते हैं और रातें छोटी होने लगती हैं। लोकभाषा में कहा जाता है कि मकर संक्रांति से दिन 'तिल-तिल' बढ़ता है। दिन की अवधि बढ़ने से खेतों में बोए गए बीजों को अधिक प्रकाश, ऊष्मा और ऊर्जा मिलती है, जिससे फसलों की वृद्धि बेहतर होती है। यही कारण है कि यह पर्व किसानों के लिए विशेष महत्व रखता है और कृषि आधारित भारतीय समाज में इसका गहरा स्थान है। 'मकर' शब्द जहां मकर राशि की ओर संकेत करता है, वहीं 'संक्रांति' का शाब्दिक अर्थ है– संक्रमण या प्रवेश। सूर्य जब एक राशि को छोड़कर दूसरी राशि में प्रवेश करता है, तो उस खगोलीय घटना को संक्रांति कहा जाता है। सूर्य वर्षभर में कुल बारह राशियों में क्रमशः प्रवेश करता है, परंतु मकर संक्रांति को सबसे महत्वपूर्ण इसलिए माना गया है क्योंकि यह उत्तरायण का प्रारंभ बिंदु है। भारतीय परंपरा में उत्तरायण काल को अत्यंत शुभ माना गया है। महाभारत में भी भीष्म पितामह ने उत्तरायण की प्रतीक्षा करते हुए देह त्याग किया था, जिससे इस काल की पुण्यता और अधिक स्थापित होती है।

मकर संक्रांति की एक विशिष्ट विशेषता यह भी है कि यह भारत का ऐसा पर्व है, जो लगभग पूरे देश में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है, हालांकि इसके

नाम, परंपराएं और स्वरूप क्षेत्र विशेष के अनुसार बदल जाते हैं। उत्तर भारत में यह पर्व कहीं लोहड़ी, कहीं खिचड़ी, कहीं माघी तो कहीं पतंगोत्सव के रूप में मनाया जाता है। मध्य भारत में इसे सामान्यतः संक्रांति कहा जाता है, जबकि दक्षिण भारत में यही पर्व 'पोंगल' के रूप में महापर्व का दर्जा रखता है। कहीं इसे उत्तरायण कहा जाता है तो कहीं पौष संक्रांति। असम में यह भोगाली बिहू या माघ बिहू कहलाता है, तो बंगाल में पौष संक्रांति के रूप में मनाया जाता है। भारत की सीमाओं से बाहर भी मकर संक्रांति का सांस्कृतिक विस्तार देखने को मिलता है। नेपाल में यह माघे संक्रांति या खिचड़ी संक्रांति के रूप में मनाई जाती है। श्रीलंका में इसे पोंगल या उझवर तिरूनल कहा जाता है। बांग्लादेश में पौष संक्रांति, थाईलैंड में सोंगकरन, म्यांमार में थिंयान, कंबोडिया में मोहा संगक्रान और लाओस में पि मा लाओ के नाम से यह पर्व मनाया जाता है। यह तथ्य दर्शाता है कि सूर्य, ऋतु और कृषि से जुड़ा यह पर्व सीमाओं से परे मानव सभ्यता का साझा उत्सव है।

हिन्दू शास्त्रों में मकर संक्रांति को अत्यंत पुण्यदायी पर्व माना गया है। इस दिन तीर्थ स्नान, दान, जप और श्राद्धकर्म को विशेष फलदायी कहा गया है। गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा जैसी पवित्र नदियों के तटों पर लाखों श्रद्धालु इस दिन स्नान के लिए एकत्र होते हैं। गंगासागर में मकर संक्रांति पर लगने वाला मेला इस पर्व की विराटता और आस्था की गहराई का जीवंत उदाहरण है। कहा जाता है कि इस दिन पवित्र नदियों में स्नान करने से न केवल आध्यात्मिक शुद्धि होती है, बल्कि मानसिक और शारीरिक ऊर्जा भी प्राप्त होती है। मकर संक्रांति पर तिल का विशेष महत्व है। तिल को शुद्धता, ऊर्जा और सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। इस दिन तिल-गुड़ से बने व्यंजनों का सेवन और दान करने की परंपरा लगभग पूरे देश में देखने को मिलती है। माना जाता है कि तिल और गुड़ शरीर को ऊष्मा प्रदान करते हैं और शीत ऋतु में स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं। यही कारण है कि इस पर्व पर 'तिल-गुड़ लो और मीठा बोलो' जैसी लोक कहावतें सामाजिक सौहार्द्र और आपसी संबंधों में मधुरता का संदेश देती हैं।

मकर संक्रांति का एक लोकप्रिय स्वरूप पतंगोत्सव के रूप में भी सामने आता है। उत्तर भारत और पश्चिमी भारत के कई हिस्सों में इस दिन आकाश रंग-बिरंगी पतंगों से भर जाता है। पतंग उड़ाना केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-जोल और स्वास्थ्य से भी जुड़ा हुआ है। कड़ाके की ठंड के मौसम में खुले आकाश के नीचे कुछ घंटे सूर्य के प्रकाश में बिताना शरीर के लिए लाभकारी माना जाता है। यह परंपरा अनजाने में ही सूर्य स्नान का रूप ले लेती है, जिससे त्वचा, हड्डियों और संपूर्ण स्वास्थ्य को लाभ पहुंचता है। इस प्रकार मकर संक्रांति केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव जीवन के बीच संतुलन का उत्सव है। यह पर्व हमें सूर्य के महत्व, कृषि के मूल्य, सामाजिक सौहार्द्र और सकारात्मक जीवन दृष्टि का बोध कराता है। विविधताओं से भरे भारतीय समाज में मकर संक्रांति एक ऐसा सूत्र है, जो विभिन्न भाषाओं, परंपराओं और संस्कृतियों को एक साझा भाव में बांध देता है। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता और स्थायी प्रासंगिकता है।

मकर संक्रांति के दिन करें ये उपाय, साल भर धन-धान्य से भरा रहेगा घर

मकर संक्रांति के दिन सूर्य ग्रह के मकर राशि में प्रवेश करने से ग्रहों की स्थिति में बड़ा परिवर्तन आता है और जीवन में शुभ घटनाओं का आगमन होता है।
मकर संक्रांति इस साल 14 जनवरी को पड़ रही है।मकर संक्रांति का जितना धार्मिक महत्व है उतना ही ज्योतिष में भी खासा स्थान मौजूद है क्योंकि इस दिन सूर्य ग्रह के मकर राशि में प्रवेश करने से ग्रहों की स्थिति में बड़ा परिवर्तन आता है और जीवन में शुभ घटनाओं का आगमन होता है। ऐसे में अगर कुछ उपाय कर लिए जाएं तो इससे साल भर व्यक्ति का घर और जीवन धन-धान्य से भरा रहता है।

मकर संक्रांति के उपाय

मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव की पूजा के बाद घर के मुख्य द्वार को जल से धोकर शुद्ध कर लें और फिर मेन गेट पर हल्दी की 5 गांठ कलावे में लपेटकर बांध दें। इससे घर में मौजूद नकारात्मक ऊर्जा दूर होगा, सकारात्मकता का संचार होगा और शुभता का घर में प्रवेश होगा।
मकर संक्रांति के दिन ग्रह दोष से छुटकारा पाने के लिए गंगा स्नान करना सबसे उत्तम उपाय है लेकिन अगर आप गंगा नदी में जाकर स्नान कर पाने में सक्षम नहीं है तो घर में ही स्नान के पानी में गंगाजल मिलाकर नहाएं। इससे ग्रह दोष के साथ-साथ शारीरिक दोष भी दूर होंगे।
मकर संक्रांति के दिन सफेद तिल का दान करें। इसके अलावा, सफेद तिल को जल में मिलाकर पीपल के पेड़ की जड़ में अर्पित करें। इससे सभी देवी-देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होगा और पितृ दोष भी शांत होगा। इसके अलावा इस उपाय को करने से सुख-समृद्धि आएगी।
मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव को अर्घ्य देते समय जल में लाला चंदन अवश्य मिलाएं। इसके अलावा, सूर्य देव के आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ अवश्य करें। इस पाठ को आप आसन पर बैठकर अपने मंदिर के सामने संकल्प लेकर करेंगे तो इससे सूर्य कुंडली में मजबूत होंगे।
मकर संक्रांति के दिन खिचड़ी बनाने का विशेष महत्व मौजूद है। ऐसे में इस दिन खिचड़ी बनाकर आप जिन भी भगवान को मानते हैं उनका भोग लगायें और फिर उस खिचड़ी को खुद भी ग्रहण करें और उससे पहले किसी भूखे व्यक्ति को खिलाएं। इससे धन-धान्य में वृद्धि होगी।

मकर संक्रांति पर जरूर करें तुलादान

मकर संक्रांति पर स्नान और पूजा-पाठ के साथ ही दान का भी विशेष महत्व है. लेकिन इस दिन तुलादान का सबसे अधिक महत्व है और इससे पुण्य मिलता है.

मकर संक्रांति हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में एक है. सूर्य देव जब धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तब मकर संक्रांति मनाई जाती है. मकर संक्रांति को खिचड़ी, पोंगल, संक्रांति, माघी और उत्तरायण आदि जैसे नामों से भी जाना जाता है. इस साल 2024 में मकर संक्रांति सोमवार 15 जनवरी को है. मकर संक्रांति के दिन लोग पवित्र नदी में स्नान करते हैं, सामर्थ्यनुसार दान देते हैं, सूर्य उपासना करते हैं और पूजा-पाठ आदि का करते हैं. इस दिन खिचड़ी खाने और दान करने का भी महत्व है. लेकिन इसी के साथ मकर संक्रांति पर तुलादान का भी विशेष महत्व है. ऐसी मान्यता है कि, मकर संक्रांति पर किए तुलादान से बहुत लाभ होता है, इससे कई गुणा पुण्यफल मिलते हैं, संकटों से मुक्ति मिलती है और मोक्ष की भी प्राप्ति होती है. लेकिन सबसे पहले जानते हैं आखिर क्या है तुलादान. साथ ही इसके महत्व और नियम के बारे में.

तुलादान क्या है

हिंदू धर्म में वैसे तो दान को बहुत ही पुण्य कार्य माना गया है, जिससे ईश्वर भी प्रसन्न होते हैं. दान जीवनकाल में किया गया ऐसा पुण्यकर्म है, जिसका फल मरणोपरांत भी मिलता है. लेकिन सभी दानों में तुलादान को पुण्य दिलाने वाला दान माना जाता है. तुलादान ऐसे दान को कहते हैं, जो व्यक्ति के भार के अनुसार दिया जाता है. तुलादान में आपको स्वयं या जिसके लिए भी आपको दान करना है, उसके वजन के बराबर अनाज का दान किसी जरूरतमंद को कर दें.

तुलादान के नियम

- तुलादान करते समय इस बात का ध्यान रखें कि, यह दान किसी ऐसे व्यक्ति को ही दें, जो असहाय या जरूरतमंद हो. कभी भी अघाये हुए हो तुलादान न करें, वरना इसका फल नहीं मिलता.
- मकर संक्रांति पर स्नान के बाद ही तुलादान करें. बिना स्नान किए किसी भी प्रकार का दान नहीं करना चाहिए.
- तुलादान यदि शुक्ल पक्ष के रविवार को किया जाए तो सबसे उत्तम माना जाता है.
- मकर संक्रांति पर दान का विशेष महत्व होता है. ऐसे में इस दिन किए तुलादान का महत्व और अधिक बढ़ जाता है.
- तुलादान में आप अनाज, नवग्रह से जुड़ी चीजें या सतनाज जैसे (गेहूं, चावल, दाल, मक्का, ज्वार, बाजरा, सावुत चना) का दान कर सकते हैं.

तुलादान की परंपरा की शुरुआत कैसे हुई

पौराणिक मान्यता के अनुसार, विष्णुजी के कहने पर ब्रह्मा जी द्वारा तुलादान को तीर्थों का महत्व तय करने के लिए कराया था. इसके साथ ही तुलादान को लेकर भगवान कृष्ण से जुड़ी एक धार्मिक व पौराणिक कथा खूब प्रचलित है, जिसके अनुसार- एक बार श्रीकृष्ण पर अपना एकाधिकार जमाने के लिए सत्यभामा ने उन्हें नारद मुनि को दान दे दिया. इसके बाद नारद मुनि कृष्ण को लेकर जाने लगे. इसके बाद सत्यभामा को अपनी भूल का एहसास हुआ. लेकिन सत्यभामा के पास कोई कृष्ण को रोकने का रोई विकल्प भी नहीं था, क्योंकि वह तो पहले ही नारद मुनि को कृष्ण का दान कर चुकी थी. तब कृष्ण को दुबारा प्राप्त करे के लिए सत्यभामा ने नारद मुनि से इसके उपाय के बारे में पूछा. नारद मुनि ने सत्यभामा से कहा कि वह, भगवान कृष्ण का तुलादान कर दे. इसके बाद एक तराजू लाई गई. तराजू के एक ओर श्रीकृष्ण बैठ गए और दूसरी ओर स्वर्ण-मुद्राएं, आभूषण, अन्न आदि रखे गए. लेकिन इतना सबकुछ रखने के बाद भी कृष्ण की ओर का पलड़ा नहीं तक हिला. ऐसे में रुक्मणी ने सत्यभामा को दान वाले पलड़े में एक तुलसी का पत्ता रखने को कहा. जैसे ही सत्यभामा ने दान वाले पलड़े में तुलसी का पत्ता रखा तो तराजू के दोनों पलड़े बराबर हो गए. इस समय श्रीकृष्ण ने ही तुलादान के महत्व के बारे में बताया था.

गीता में लिखे हैं मकर संक्रांति के 3 रहस्य

सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करने को संक्रांति कहते हैं। वर्ष में 12 संक्रांतियां होती है जिसमें से 4 संक्रांति मेष, तुला, कर्क और मकर संक्रांति ही प्रमुख मानी गई हैं। मकर संक्रांति के दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है इसीलिए इसे मकर संक्रांति कहते हैं। गीता में इसका क्या महत्व है जानिए 3 रहस्य।

- **उत्तरायण में शरीर त्यागने से नहीं होता है पुनर्जन्म** : मकर संक्रांति के दिन सूर्य उत्तरायण होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने उत्तरायन का महत्व बताते हुए गीता में कहा है कि उत्तरायन के 6 मास के शुभ काल में, जब सूर्य देव उत्तरायन होते हैं और पृथ्वी प्रकाशमय रहती है, तो इस प्रकाश में शरीर का परित्याग करने से व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता, ऐसे लोग ब्रह्म को प्राप्त हैं। इसके विपरीत सूर्य के दक्षिणायण होने पर पृथ्वी अंधकारमय होती है और इस अंधकार में शरीर त्याग करने पर पुनः जन्म लेना पड़ता है। यही कारण था कि भीष्म पितामह ने शरीर तब तक नहीं त्यागा था, जब तक कि सूर्य उत्तरायन नहीं हो गया। माना जाता है कि उत्तरायण में शरीर का परित्याग करने से व्यक्ति को सद्गति मिलती है।
- **देवताओं का दिन प्रारंभ** : हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार मकर संक्रांति से देवताओं का दिन आरंभ होता है, जो आषाढ़ मास तक रहता है। कर्क संक्रांति से देवताओं की रात प्रारंभ होती है। अर्थात देवताओं के एक दिन और रात को मिलाकर मनुष्य का एक वर्ष होता है। मनुष्यों का एक माह पितरों का एक दिन होता है। उनका दिन शुक्ल पक्ष और रात कृष्ण पक्ष होती है।
- **दो मार्ग का वर्णन** : जगत में दो मार्ग है शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। देवयान और पितृयान। देवयान में ज्योतिर्मय अग्नि-अभिमानी देवता हैं, दिन का अभिमानी देवता है, शुक्ल पक्ष का अभिमानी देवता है और उत्तरायण के छः महीनों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में मरकर गए हुए ब्रह्मवेत्ता योगीजन उपयुक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले जाए जाकर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। पितृयान में धूमाभिमानी देवता है, रात्रि अभिमानी देवता है तथा कृष्ण पक्ष का अभिमानी देवता है और दक्षिणायन के छः महीनों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में मरकर गया हुआ सकाम कर्म करने वाला योगी उपयुक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले गया हुआ चंद्रमा की ज्योत को प्राप्त होकर स्वर्ग में अपने शुभ कर्मों का फल भोगकर वापस आता है।लेकिन जिनके शुभकर्म नहीं हैं वे उक्त दोनों मार्गों में गमन नहीं करके अधोयोनि में गिर जाते हैं।

संक्रांति पर इन मंत्रों से करें पूजन

पौराणिक शास्त्रों के अनुसार सूर्यदेव सृष्टि के महत्वपूर्ण आधार हैं। सूर्य की उपासना वैदिक काल से चली आ रही है। सूर्यदेव ज्ञान, आध्यात्म और प्रकाश के प्रतीक माने जाते हैं और मकर संक्रांति भगवान सूर्यदेव का त्योहार है। वर्ष 2026 में मकर संक्रांति का त्योहार 14 जनवरी को मनाया जा रहा है। इस दिन सूर्यदेव दक्षिण की यात्रा समाप्त करके उत्तर दिशा की तरफ बढ़ते हैं यानी मकर संक्रांति के दिन सूर्य उत्तरायन हो जाते हैं।
भगवान सूर्यदेव के उदय होते ही पूरी दुनिया का अंधकार नष्ट होकर चारों ओर प्रकाश फैल जाता है। मकर संक्रांति का पर्व किसानों का मुख्य त्योहार माना गया है, क्योंकि सूर्यदेव की कृपा से फसल का उत्पादन होता है। हिन्दू धर्म के अनुसार जब सूर्य का मकर राशि में प्रवेश होता है तब यह मकर संक्रांति कहलाता है। सूर्य अर्घ्य देने के नियम-

- प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व शुद्ध होकर स्नान करें।
- तत्पश्चात उदित होते सूर्य के समक्ष कुश का आसन लगाएं।
- आसन पर खड़े होकर तांबे के पात्र में पवित्र जल लें।
- उसी जल में मिश्री भी मिलाएं। मान्यतानुसार सूर्य को मीठा जल चढ़ाने से जन्मकुंडली के दूषित मंगल का उपचार होता है।
- मंगल शुभ हो तब उसकी शुभता में वृद्धि होती है।
- जैसे ही पूर्व दिशा में सूर्यागमन से पहले नारंगी किरणें प्रस्फूटित होती दिखाई दें, आप दोनों हाथों से तांबे के पात्र को पकड़ कर इस तरह जल चढ़ाएं कि सूर्य जल चढ़ाती धार से दिखाई दें।
- सूर्य को जल धीमे-धीमे इस तरह चढ़ाएं कि जलधारा आसन पर आ गिरे ना कि जमीन पर।
- जमीन पर जलधारा गिरने से जल में समाहित सूर्य-ऊर्जा धरती में चली जाएगी और सूर्य अर्घ्य का संपूर्ण लाभ आप नहीं पा सकेंगे।
- अर्घ्य देते समय यह मंत्र 11 बार पढ़ें- ऊँ ऐहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजोराशे जगत्पते। अनुकंपये माम भक्त्या गृहणार्घ्यं दिवाकरः।।'
- फिर यह मंत्र 3 बार पढ़ें- ऊँ ह्रीं ह्रीं सूर्याय, सहस्त्रकिरणाय। मनोवांछित फलं देहि देहि स्वाहाः।।'
- तत्पश्चात सीधे हाथ की अंजूरी में जल लेकर अपने चारों ओर छिड़कें।
- अपने स्थान पर ही 3 बार घूम कर परिक्रमा करें।
- आसन उठाकर उस स्थान को नमन करें।
- इसके अलावा सूर्यदेव को अर्घ्य देते समय तांबे के लोटे में जल लेकर उसमें रोली, चंदन, लाल पुष्प डालना चाहिए तथा चावल अर्पित करके गुड़ चढ़ाना चाहिए। इससे सूर्यदेव की कृपा प्राप्त होती है।

सूर्य पूजा का खास महत्व

- रामायण काल से ही भारतीय संस्कृति में दैनिक सूर्य पूजा का प्रचलन चला आ रहा है। रामकथा में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा नित्य सूर्य पूजा का उल्लेख मिलता है। मकर संक्रांति के दिन सूर्य की विशेष आराधना होती है।
- सूर्य के उत्तरायण होने के बाद से देवों की ब्रह्म मुहूर्त उपासना का पुण्यकाल प्रारंभ हो जाता है। इस काल को ही परा-अपरा विद्या की प्राप्ति का काल कहा जाता है। इसे साधना का सिद्धिकाल भी कहा गया है।
- सूर्य संस्कृति में मकर संक्रांति का पर्व ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, आद्यशक्ति और सूर्य की आराधना एवं उपासना का पावन व्रत है, जो तन-मन-आत्मा को शक्ति प्रदान करता है।

मकर संक्रांति के दिन जरूर करें इन चीजों का दान

हिंदू धर्म में सभी तीज और त्योहारों का विशेष महत्व है। वहीं मकर संक्रांति के दिन दान-पुण्य करने का विधान है। अब ऐसे में मकर संक्रांति के दिन किन चीजों का दान करना शुभ माना जाता है। इसके बारे में विस्तार से जानते हैं। अंग्रेजी कैलेंडर के हिसाब से नए साल आरंभ हो चुका है और इसी के साथ तीज और त्योहार भी जल्द ही शुरू होने वाला है। मकर संक्रांति का पर्व साल का पहला पहला त्योहार है। धार्मिक और ज्योतिष दृष्टि से मकर संक्रांति के पर्व बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। पंचांग के हिसाब से जिस दिन सूर्यदेव मकर राशि में गोचर करते हैं, उसी दिन मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है। मकर संक्रांति के दिन खरमास का समापन हो जाते हैं और इसी दिन से शुभ कार्य आरंभ हो जाते हैं। मकर संक्रांति के दिन दान-पुण्य करने का विशेष महत्व है। अब ऐसे में इस दिन किन चीजों का दान करना शुभ माना जाता है।

मकर संक्रांति के दिन करें अन्न का दान

मकर संक्रांति के दिन अन्न का दान विशेष रूप से करें। मकर संक्रांति का त्योहार हिंदू धर्म में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन सूर्य देव धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करते हैं। यह दिन नए साल की शुरुआत और पुराने साल के अंत का प्रतीक भी माना जाता है। इस दिन दान करना बहुत शुभ माना जाता है। अन्न को देवता का रूप माना जाता है। अन्न दान करने से देवता प्रसन्न होते हैं और व्यक्ति को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं। ज्योतिष के अनुसार, अन्न दान करने से ग्रहों का अशुभ प्रभाव कम होता है और व्यक्ति को सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।
मकर संक्रांति के दिन करें पीले वस्त्र का दान
पीला रंग सूर्य देव से जुड़ा हुआ है। मान्यता है कि सूर्य देव को पीला रंग बहुत प्रिय है। इसलिए मकर संक्रांति के दिन पीले वस्त्रों का दान करने से सूर्य देव प्रसन्न होते हैं। पीला रंग सकारात्मक ऊर्जा और उल्लास का प्रतीक है। पीले वस्त्रों का दान करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और सुख-समृद्धि आती है।

मकर संक्रांति के दिन करें गुड़ का दान

गुड़ को सूर्य देव से जोड़ा जाता है। माना जाता है कि मकर संक्रांति के दिन गुड़ का दान करने से सूर्य देव प्रसन्न होते हैं और अपनी कृपा बरसाते हैं। गुड़ का दान करने से व्यक्ति को मनोवांछत फलों की प्राप्ति हो सकती है।

मकर संक्रांति के दिन करें काले तिल का दान

मकर संक्रांति के दिन गुड़ और काले तिल के लड्डू बनाएं जाते हैं और सूर्यदेव की पूजा अर्पित किया जाता है। इसके साथ ही शनिदेव को भी चढ़ाया जाता है। इससे व्यक्ति की कुंडली में स्थित ग्रहदोष से छुटकारा मिल जाता है और उत्तम परिणाम मिलने लग जाते हैं।

धन लाभ के लिए मकर संक्रांति के दिन गाय को खिलाएं ये चीजें

मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश कर पुनः शुभ स्थिति में आ जाते हैं। ऐसे में इस दिन कुछ पुण्यकर कार्यों को करने से न सिर्फ सूर्य ग्रह की कृपा मिलती है बल्कि जीवन में शुभ परिणामों की प्राप्ति होती है।
मकर संक्रांति इस साल 14 जनवरी को पड़ रही है। इस दिन सूर्य देव की पूजा का विधान है। मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश कर पुनः शुभ स्थिति में आ जाते हैं। ऐसे में इस दिन कुछ पुण्यकर कार्यों को करने से न सिर्फ सूर्य ग्रह की कृपा मिलती है बल्कि जीवन में शुभ परिणामों की प्राप्ति होती है और हर काम में सफलता मिलने लग जाती है।

मकर संक्रांति के दिन गाय को खिलाएं गुड़ रोटी

गुड़ और गेहूं का संबंध सूर्य ग्रह से माना गया है। ऐसे में मकर संक्रांति के दिन गाय को गुड़ और रोटी खिलाने से जहां एक ओर कुंडली में सूर्य की स्थिति मजबूत होती है तो वहीं, गौ माता का आशीर्वाद भी बना रहता है।

मकर संक्रांति के दिन गाय को खिलाएं गोंद लड्डू

मकर संक्रांति के दिन गाय को गोंद के लड्डू खिलाने चाहिए। ऐसा माना जाता है कि इस दिन गाय को गोंद के लड्डू खिलाने से न सिर्फ घर में सफलता प्राप्ति के अमार्ग खुलते हैं बल्कि भाग्य में वृद्धि होती है। व्यक्ति को सौभाग्य की प्राप्ति होती है। देवी-देवताओं का आशीर्वाद मिलता है और ग्रह दोष भी दूर हो जाता है।

मकर संक्रांति के दिन गाय को खिलाएं तिल पंजीरी

मकर संक्रांति के दिन गाय को तिल और पंजीरी भी खिलाना शुभ माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र में ऐसी मान्यता है कि तिल से बनी किसी चीज का भोग गाय को इस दिन खिलाने से पिट शांत होते हैं और शनिदेव भी प्रसन्न रहते हैं।

मकर संक्रांति

गिरीश जोशी

आहार का विज्ञान और समाज संगठन का सूत्र

शास्त्रों में लिखा है 'माघे मासे तु संप्राप्ते मकरं सूर्यगच्छति। तस्मात् संक्रान्तिरित्युक्ता पुण्यदा पुण्यवर्धिनी॥' अर्थात् - माघ मास में जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, उसे मकर संक्रांति कहते हैं। यह पर्व पुण्य देने वाला और पुण्य को बढ़ाने वाला होता है। वास्तव में सूर्य तो अपने स्थान पर होता है पृथ्वी और अन्य ग्रह उसके चारों और चक्कर लगाते हैं। लेकिन ऐसा कहा जाता है कि जब सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है यानी पृथ्वी से देखने पर सूर्य मकर राशि में दिखाई देने लगता है तब मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है।

आज के समय में हम लोग अपने भोजन को लेकर बड़े सजग हैं। खाने की हर चीज के बारे में उसकी कैलोरी को देखकर उसे खाने या ना खाने का फैसला लेते हैं। ऐसे में सवाल उठना लाजिमी हो जाता है कि संक्रांति के समय तिल - गुड़ और खिचड़ी क्यों खाना चाहिए, पतंग क्यों उड़ाते है। नई पीढ़ी के ढेर सारी सवालों का जवाब आज के विज्ञान की दृष्टि से देखने की कोशिश करते है तो ये दिखता है कि हमारे देश में सारे त्यौहार प्राकृतिक घटनाओं से जुड़े हुए हैं। मुख्य रूप से ग्रह - नक्षत्रों की गति, अलग - अलग राशियों में भ्रमण के आधार पर उत्सव पर्व मनाए जाते हैं।

खगोल शास्त्र का आधार

शास्त्रों में लिखा है 'माघे मासे तु संप्राप्ते मकरं सूर्यगच्छति।तस्मात् संक्रान्तिरित्युक्ता पुण्यदा पुण्यवर्धिनी॥ 'अर्थात - माघ मास में जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, उसे मकर संक्रांति कहते हैं। यह पर्व पुण्य देने वाला और पुण्य को बढ़ाने वाला होता है। वास्तव में सूर्य तो अपने स्थान पर होता है पृथ्वी और अन्य ग्रह उसके चारों और चक्कर लगाते हैं। लेकिन ऐसा कहा जाता है कि जब सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है यानी पृथ्वी से देखने पर सूर्य मकर राशि में दिखाई देने लगता है तब मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है।

मकर संक्रांति के बाद दिन बड़े होने लगते हैं और रात छोटी होने लगती है। यानी इस दिन से जीवन में प्रकाश का समय बढ़ने लगता है, अंधकार घटने लगता है। हमारी संस्कृति में प्रकाश को ज्ञान का प्रतीक भी माना जाता है अंधकार को अज्ञान कहा जाता है।

संक्रांति का वास्तविक अर्थ

संक्रांति का अर्थ है सम्यक क्रांती अर्थात योग्य दिशा में व्यक्ति और समाज का परिवर्तन। समाज को आत्मविस्मृति के अंधकार से बाहर निकाल कर, चेतना के,जागृति के, सत्य के प्रकाश की ओर ले जाना सनातन संस्कृति का उद्देश्य है इस लक्ष्य की याद समाज को करवाने के लिए मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है ।

मकर राशि में प्रवेश करने वाले भगवान सूर्य की महत्ता को बताने वाली एक सूक्ति है - 'नमः सूर्याय लोकाय लोकनाथाय भास्वते। सर्वरोगहरायैव मकरस्थाय ते नमः॥ ' अर्थात - लोकों को प्रकाशित करने वाले, लोकनाथ, तेजस्वी सूर्यदेव को नमस्कार है। मकर राशि में स्थित, सभी रोगों को दूर करने वाले सूर्य को प्रणाम है।

तिल के लाभ

मकर संक्रांति पर तिल और गुड़ साथ में खाने की परंपरा है। शास्त्र कहते है - 'तिलगुडैः सह हर्षेण सूर्यपूजा विधीयताम्। मकरसंक्रान्तिकालेऽस्मिन् सर्वे सन्तु निरामयाः॥' अर्थात मकर संक्रांति के अवसर पर तिल और गुड़ के साथ हर्षपूर्वक सूर्य की पूजा की जाए। इस पावन समय में सभी लोग स्वस्थ और निरोग रहें। हमारे पूर्वज विज्ञान जानते थे। आज का विज्ञान कहता है तिल में उच्च मात्रा में कैलोरी, प्रोटीन और स्वस्थ वसा होती है, जो ठंडे मौसम में शरीर को ऊर्जा देती है। यह शरीर को गर्म रखने में मदद करता है। साथ ही तिल में कैल्शियम, मैग्नीशियम और जिंक जैसे मिनरल्स होते हैं, जो हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। सर्दी में हड्डियों में दर्द और समस्याएँ बढ़ सकती हैं, लेकिन तिल इन समस्याओं को कम करने में मदद करता है।

गुड़ का महत्व

उसी तरह गुड़ के बारे में आज का विज्ञान कहता है कि गुड़ में प्राकृतिक गर्मी होती है, जो सर्दियों में शरीर को अंदर से गर्म रखने में मदद करती है। सर्दियों में कई बार शरीर में पानी की कमी और पाचन संबंधी समस्याएँ बढ़ जाती हैं, और गुड़ इन समस्याओं को हल करने में मदद करता है। सर्दियों में शरीर की इम्युनिटी कमजोर हो सकती है, और गुड़ में आयरन और फोलिक एसिड की मौजूदगी से शरीर में खून की कमी पूरी होती है। गुड़ में एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करते हैं। यह सर्दी, जुकाम और फ्लू जैसी मौसमी बीमारियों से बचाव में मदद करता है। इन वैज्ञानिक गुणों के कारण सर्दी में गुड़ और तिल खाने की परंपरा हमारे पूर्वजों ने स्थापित की ।

खिचड़ी क्यों खाई जाती है

मकर संक्रांति के समय शीत ऋतु अपने चरम पर होती है। इस मौसम में पाचन शक्ति कमजोर हो सकती है। खिचड़ी हल्का, सुपाच्य और गर्म भोजन है, जो शरीर को ठंड से संरक्षण देता है और पाचन को संतुलित रखता है। आयुर्वेदिक दृष्टि से खिचड़ी में चावल और दाल का संयोजन होता है, जिसे आयुर्वेद में 'पूर्ण आहार' माना जाता है।दाल से प्रोटीन, चावल से ऊर्जा घी से बल और ओज मिलता है। शीत ऋतु में बढ़ने वाले वात और कफ के दोष को खिचड़ी संतुलित करती हैं। उत्तर भारत, विशेषकर प्रयागराज और पूर्वांचल क्षेत्रों में मकर संक्रांति को 'खिचड़ी पर्व' भी कहा जाता है। इस दिन खिचड़ी का दान पुण्यकारी माना जाता है। साधु-संतों और जरूरतमंदों को खिचड़ी खिलाने की परंपरा भी है। खिचड़ी सादा और सर्वसुलभ भोजन है। इसे सभी वर्गों के लोग एक समान रूप से ग्रहण कर सकते हैं, इसलिए यह समरसता और समानता का प्रतीक भी मानी जाती है। संक्रांति पर खिचड़ी खाना शरीर को स्वस्थ रखने, ऋतु के अनुकूल आहार लेने और धार्मिक पुण्य अर्जित करने, संगठन और समरसता का भाव बढ़ाने का प्रतीक है।

दान का महत्व

मकरस्थे दिवाकरे दानस्नानतपःक्रियाः।
कृताः कोटिगुणं पुण्यं ददाति नात्र संशयः॥ अर्थात् - सूर्य के मकर राशि में स्थित होने पर किया गया दान, स्नान और तप करोड़ों गुना पुण्य प्रदान करता है, इसमें कोई संदेह नहीं। इसीलिए मकर संक्रांति के अवसर पर जरूरतमंदों को उनके लिए जरूरी चीजों का दान सक्षम और समर्थ लोगों को करने के लिए कहा गया है।

पतंग की प्रासंगिकता

इस अवसर पर पतंग उड़ाने की परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है, ये भारतीय लोक संस्कृति का हिस्सा है। जो खुशी, उल्लास और उत्सव का प्रतीक है। पतंग उड़ाना एक हल्का व्यायाम है। खुले आकाश में रहने से मानसिक तनाव कम होता है। धूप में रहने से शरीर को विटामिन-डी मिलता है जिससे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

समाज संगठन की दृष्टि से संदेश

हमारी मान्यता है कि समाज में परिवर्तन, समन्वय और आत्मीयता पूर्ण व्यवहार से लाया जाना चाहिए। इसके लिए समाज के साथ संपर्क और समाज का संगठन जरूरी है। इस उत्सव में पहले लोग एक दूसरे के घरों पर संपर्क के लिए भेंट के लिए जाया करते थे वहां तिल और गुड़ का सेवन किया जाता था। महाराष्ट्र में आज भी कहा जाता है 'तिल गुड़ घ्या आणि गोड गोड बोला ' इसका अर्थ है आइए तिल गुड खाइए और एक दूसरे से मीठा बोलिए मधुर व्यवहार कीजिए, यही संगठन का भी मूल सूत्र है।

संक्रांति उत्सव को संगठन की दूसरी दृष्टि से भी देखा जाए तो इसमें जो प्रतीक छुपे हुए है उसका अर्थ इस तरह निकलता है कि तिल बिखरे हुए होते हैं उन्हें साथ में जोड़ने के लिए गुड का माध्यम जरूरी होता है। इसलिए जो भी व्यक्ति लोगों को संगठित करना चाहते हैं उनके व्यवहार में गुड़ जैसी मिठास होना चाहिए तभी वह तिल जैसे बिखरे हुए समाज के लोगों को जोड़ सकता है यही मकर संक्रांति का उत्सव का संदेश है।

स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर स्वदेशी संकल्प

मैराथन दौड़ सम्पन्न, सहभागी बने मगध शिक्षा समाज कल्याण समिति,जन अभियान परिषद, स्वदेशी जागरण

सुबह सवेरे सोहागपुर

स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर स्वदेशी संकल्प मैराथन दौड़ मगध शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति एवं स्वदेशी जागरण मंच एवं जन अभियान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय परिसर में संम्पन्न हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सीबीएमओ डॉ. श्रीमती रेखा सिंह गौर ने उपस्थित जनों से स्वदेशी जीवन शैली एवं स्वदेशी भोजन अपनाने का आव्हान किया। आपने पिज़्ज़ा, बर्गर , फास्टफूड , पैकेजड फूड से दूर रहकर शुद्ध भारतीय भोजन के वास्तविक गुणों का विस्तार से वर्णन

किया। मगध शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति के अध्यक्ष विशाल गोलानी ने स्वामी विवेकानंद जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब स्वामी विवेकानंद जी शिकागो धर्म सम्मेलन में गए थे। तब भारत एवं भारतीयता सभ्यता को नीचा दिखाने के प्रयास में हमारे धर्मग्रंथ 'श्रीमद्भगवद गीता' को सबसे नीचे रखा गया । सभी को लगा था कि स्वामी जी दुःखी होंगे। परंतु उन्होंने प्रसन्न होकर बोले कि हमारी श्री भगवद्गीता को आपने सही स्थान पर रखा है । क्योंकि दुनिया के सारे धर्मग्रंथों के मूल में श्री भगवद्गीता ही है ।

आपने अपने उद्बोधन में आगे स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से अब हमारा 'नया भारत 'मजबूत हो रहा है ।इसका मुख्य यह कारण है कि अब भारत के लोग पूर्व की तुलना में अधिक स्वदेशी वस्तुएं खरीद रहे हैं । यदि हम सभी सुबह से रात में सोने तक अगर स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करेंगे तो हमारा भारत और अधिक मजबूत और शक्तिशाली देश बनेगा। जन अभियान परिषद के विकासखंड समन्वयक किशोर कड़ोले ने बच्चों और देश को मजबूत होने का रास्ता स्वदेशी को माध्यम बताया। इसी अवसर पर भूतपूर्व सैनिको ने मैराथन की बागडोर संभाली। फिजिकल ट्रेनिंग एकेडमी (रगड़ा) के संचालक भूतपूर्व सैनिक नीलम कुमार गुर्जर ने धावकों से संवाद किया रूट बताकर दौड़ की बारीकियां समझिई। फौजियों नीलम कुमार गुर्जर, राजेश रघुवंशी, बालमुकुंद पटेल, अजय सोनी, मनोहर सांगा एवं अमित पटेल आदि ने रूट मैनेजमेंट के साथ ट्रैफिक भी संभाला। तथा धावकों को सुरक्षित गंतव्य तक पहुँचाने में सोहागपुर पुलिस के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । कार्यक्रम के निर्णायक मंडल में अभिनव पालीवाल, शिवम दुबे , आशीष सराठे , कौतुभ दुबे , अंशिका छाबड़िया एवं निकिता कुशवाह थे। मैराथन दौड़ में स्कूली बच्चों के बालक वर्ग में प्रथम - शिवा बेलवंशी,द्वितीय - अंश मंडल, तृतीय - नितिन रघुवंशी ,स्कूली बच्चों के बालिका वर्ग में

प्रथम - खुशी मंडल,द्वितीय - रितिका बेलवंशी ,तृतीय - निधि मजूमदार, युवा बालक वर्ग में प्रथम - प्रेम हलदार (आर्मी के लिए भी चयनित हुए हैं), द्वितीय - सुमित कहार, तृतीय - नरेंद्र ठाकुर ,युवा बालिका वर्ग में बेबी अफ़सा खान प्रथम आई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सीबीएमओ डॉक्टर श्रीमती रेखा सिंह गौर, मगध शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति अध्यक्ष विशाल गोलानी, जन अभियान के किशोर कड़ोले, गजेंद्र सिंह ठाकुर, (भूतपूर्व सैनिकों में) नीलम कुमार गुर्जर, राजेश रघुवंशी, बालमुकुंद पटेल, मनोहर सांगा, अजय सोनी एवं अमित पटेल, (निर्णायक मंडल में) अभिनव पालीवाल, शिवम दुबे, आशीष सराठे, अंशिका छाबड़िया, कौस्तुभ दुबे, निकिता कुशवाह, अन्य साथियों में अभिषेक अग्रवाल, जय चंदेल आदि उपस्थित थे।

श्री वैष्णव बैरागी युवा संगठन धार के तत्वाधान में जगतगुरु श्री श्री 1008 रामानंदाचार्य जी महाराज की जयंती श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाई गई

धार। श्री वैष्णव बैरागी युवा संगठन धार के तत्वाधान में प्राचीन सिद्धनाथ मंदिर धार में जगतगुरु श्री श्री 1008 रामानंदाचार्य जी महाराज की जयंती श्रद्धा और भक्ति के साथ धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ जगतगुरु श्री रामानंदाचार्य जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया गया व सामूहिक रूप से समाज बंधुओ ने गुरुदेव की महाआरती की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर भगवानदास जी महाराज थे। उन्होंने अपने आशीर्वचन में कहा कि बैरागी समाज के बंधु इस आधुनिक युग के साथ-साथ अपनी परंपराओं का भी निर्वहन करें। अपने व्यक्तित्व में भी झलके ऐसा

प्रयास करें प्रत्येक समाज बंधु कम से कम कंठी, तिलक व शिखा अवश्य रखें जिससे हिंदू समाज में आपका जो स्थान है वह बना रहे वह आदर भाव से आपके साथ व्यवहार हो।

स्वागत उद्बोधन ईश्वर दास वैष्णव ने दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता लक्ष्मण दास बैरागी ने की। कार्यक्रम का संचालन अरविंद वैष्णव ने किया। युवा संगठन के सुरेश वैष्णव, हेमंत वैष्णव, सुनील वैष्णव, हरिओम बैरागी, ओम बैरागी, विशाल वैष्णव, पीयूष वैष्णव, रोहित पाठक, महेश खलीफा का विशेष सहयोग रहा। आभार मीडिया प्रभारी दीपक बैरागी द्वारा व्यक्त किया गया।

स्वच्छ पेयजल आपूर्ति में लापरवाही नहीं हो : कलेक्टर

शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति के प्रबंधक कार्यों की समीक्षा

विदिशा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने नगरीय निकायों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की स्वच्छता, उपलब्धता और गुणवत्ता संबंधी कार्यों की समीक्षा वीसी के माध्यम से की गई।दिए गए निर्देशों के अनुपालन तहत विदिशा जिले में संपादित कार्यों की कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने पृथक से समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री द्वारा आहूत वीसी समीक्षा बैठक के दौरान एन आई सी व्हीसी कक्ष में विदिशा नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रीति राकेश शर्मा , कुरवाई नगर परिषद के अध्यक्ष समेत अन्य जनप्रतिनिधि तथा कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के अलावा विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने जिला स्तरीय कार्यों की समीक्षा बैठक में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं उन्होंने कहा कि जल सुरक्षा, जल संरक्षण और जल सुनवाई के महती उद्देश्य के के लिए प्रदेश व्यापी 'स्वच्छ जल अभियान' 10 जनवरी से शुरू हुआ है। 'जल सुनवाई' से आम जनता को मिलेगा सुनवाई का हक और होगी साफ पेयजल की सुनिश्चितता अभियान के क्रियान्वयन के लिये जन जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता का लक्ष्य दो चरणों में अभियान का क्रियान्वयन (प्रथम 10 जनवरी से 28 फरवरी, द्वितीय 1 मार्च से 31 मई तक क्रियान्वित किया जाएगा। अभियान के तहत समस्त जल शोधन यन्त्र और पेयजल संग्रहण टंकियों की होगी सफाई, जीआईएस मैप आधारित एप से होगी निगरानी पेयजल पाइप लाइन में दूषित मिश्रण को रोकने की होगी कारवाई जीआईएस मैप पर वाटर पाइप लाइन और सीवेज पाइप लाइन की मैपिंग की जायेगी, इंटर पाइंट सेक्शन का होगा चिन्हांकन और लीकेज की होगी जांच

रोबोट से होगी पाइप लाइन में लीकेज की जांच समस्त पेयजल स्त्रोत की गुणवत्ता का होगा परीक्षण : अल्पकालीन और दीर्घकालीन उपायों के माध्यम से नागरिकों को साफ पीने का पानी उपलब्ध कराना सुनिश्चित करने के उद्देश्य को करेंगें पूरा जल की गुणवत्ता का नियमित होगा परीक्षण एसटीपी की भी होगी नियमित निगरानी हर मंगलवार होगी 'जल सुनवाई' 181 पर पेयजल संबंधी शिकायतों को दर्ज करने की विशेष व्यवस्था पेयजल की समस्या से संबंधित आवेदन पत्र का निराकरण समयसीमा में, निराकरण से आवेदक को कराया जायेगा अवगत मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा वीसी में दिए गए निर्देशों का हवाला देते हुए कलेक्टर श्री गुप्ता ने बताया कि हमारी जबावदारी है कि हम साफ जल घर-घर तक पहुँचायें तकनीक का उपयोग करते हेतू जबावदारी का निर्वहन करेंगें पेयजल की गुणवत्ता की नियमित जांच हो दूषित होने पर वैकल्पिक व्यवस्था की जाये किसी भी स्थित में दूषित पेयजल सप्लाई न हो जल सुनवाई का गंभीरता से आयोजन हो बडी चुनौती है, लेकिन गंभीरता से सामना करेंगे और देश में एक आदर्श प्रस्तुत करेंगें. अभियान के क्रियान्वयन मे लापरवाही करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के विरुध्द होगी कड़ी कारवाई की जाएगी।

कलेक्टर ने की नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों की समीक्षा : कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता द्वारा जिले के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता एवं गुणवत्ता की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में नगरीय निकायों द्वारा जानकारी दी गई कि उनके द्वारा प्रत्येक 6 माह के अंतराल पर पेयजल टंकियों एवं फिल्टर प्लांट की नियमित सफाई की जाती है। साथ ही नगरीय क्षेत्रों में प्रदाय किए जा रहे पेयजल का परीक्षण लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की प्रयोगशाला में कराया जाता है। इस पर कलेक्टर ने निर्देश दिए कि सभी नगरीय निकाय प्रयोगशालाओं में प्रशिक्षित अमले एवं आवश्यक रसायनों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करें, ताकि जल गुणवत्ता की नियमित जांच में किसी प्रकार की कमी न रहे। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यपालन यंत्री ने बताया कि जिले के 109 ग्रामों में समूह नलजल योजना के माध्यम से तथा 404 ग्रामों में एकल नलजल योजनाओं के अंतर्गत नलकूपों से पेयजल प्रदाय किया जा रहा है।

रेडक्रॉस सेवा सप्ताह के अंतर्गत नर्मदापुरम में नि:शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन

24 मोतियाबिंद मरीज भोपाल रवाना

नर्मदापुरम (निप्र)। भारतीय रेडक्रॉस समिति मध्यप्रदेश राज्य शाखा, भोपाल के निर्देशों के परिपालन में भारतीय रेडक्रॉस समिति नर्मदापुरम द्वारा स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर दिनांक 6 से 12 जनवरी 2026 तक सेवा सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न सेवा गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में जिला रेडक्रॉस समिति के अध्यक्ष एवं कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के मार्गदर्शन में तथा सभापति श्री अरुण शर्मा, सचिव डॉ. हर्षल काबरे एवं जिला प्रबंध समिति के सदस्यों के सहयोग से नियमित कार्यक्रमों के अंतर्गत दिनांक 11 जनवरी 2026 को चिरायु मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, भोपाल के सहयोग से नि:शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। नेत्र शिविर में 78 से अधिक मरीजों का नेत्र परीक्षण किया गया, जिसमें से मोतियाबिंद से पीड़ित 24 मरीजों को चिन्हित कर उपचार हेतु बस द्वारा भोपाल रवाना किया गया। शिविर के माध्यम से जरूरतमंद मरीजों को नि:शुल्क जांच एवं उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई गई। कार्यक्रम में सचिव डॉ. हर्षल काबरे, श्री मुकेश श्रीवास्तव, श्री डी.एस. दागी, श्री गौरव सेठ, श्री उदित द्विवेदी, श्री विपिन जैन, श्री अमीन राइन, श्री शेर सिंह बड़कुर उपस्थित रहे। नेत्र विभाग से डॉ. रिचा गौर, मनीषा एवं अनिता ने सेवाएं दीं। साथ ही रेडक्रॉस वॉलेंटियर्स अनिता केवट, रुचि यादव, छाया सोनी, याशिका नागर, वंदना यादव, आरती, मुकेश बड़कुर एवं सीमा दामरे की सराहनीय सहभागिता रही।

हर पंचायत तक पहुंचेगी योजनाओं की जानकारी

विदिशा (निप्र)। राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2026 को 'किसान कल्याण वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है, जिसका भव्य शुभारंभ आज मुख्यमंत्री जी के कर कमलों से जंबूरी मैदान, भोपाल में किया गया। इस राज्य स्तरीय कार्यक्रम में विदिशा जिले से किसानों की बड़ी सहभागिता रही। जिले के उप संचालक कृषि श्री के.एस. खपेडिया ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर विदिशा जिले से 100 बसों की व्यवस्था की गई, जिनके माध्यम से 4270 कृषकों ने कार्यक्रम में सहभागिता की। कृषि वर्ष 2026 के शुभारंभ के साथ ही आज 11 जनवरी से जिले के प्रत्येक विकासखंड में एक-एक कृषि रथ का संचालन भी प्रारंभ किया गया। इसी क्रम में आज ग्राम ढोलखेड़ी से माननीय विधायक श्री मुकेश टंडन जी द्वारा कृषि रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

कृषि रथ शुभारंभ कार्यक्रम में जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी रहे उपस्थित: कृषि रथ शुभारंभ अवसर पर विदिशा जनपद पंचायत के अध्यक्ष श्री वीर सिंह रघुवंशी (कक्का) जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के पूर्व अध्यक्ष श्री श्यामसुंदर शर्मा, उप संचालक कृषि श्री के.एस. खपेडिया, सहायक संचालक उद्यान श्री एस.एल. सोलंकी, सहायक संचालक कृषि श्रीमती अविना सिंह परिहार, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री अशोक सिंह कौरव, जिला सलाहकार श्री डी.के. तिवारी, प्रभारी वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी विदिशा श्री विशाल यादव सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। साथ ही खाद, बीज एवं कीटनाशक दवा विक्रेता तथा ग्राम ढोलखेड़ी एवं इमलिया के कृषक भी बड़ी संख्या में मौजूद थे।

कृषि रथ के माध्यम से किसानों तक पहुंचेगी वैज्ञानिक जानकारी : विदिशा जिले के प्रत्येक विकासखंड अंतर्गत निर्धारित ग्राम पंचायतों में कृषि रथ का नियमित भ्रमण किया जाएगा। प्रतिदिन ग्राम पंचायत स्तर पर कृषि रथ के माध्यम से कृषि एवं संबद्ध विभागोंकृजैसे पशुपालन, उद्यानिकी, मत्स्य पालन आदि से संबंधित योजनाओं एवं गतिविधियों की जानकारी किसानों तक पहुंचाई जाएगी। इस दौरान किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित कर नवीन एवं वैज्ञानिक तकनीकी सुधारों की जानकारी दी जाएगी।

कृषि रथ के माध्यम से जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, कीट एवं रोग प्रबंधन, कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाने के उपाय, फसल विविधीकरण, विभागीय कृषि योजनाओं का प्रचार-प्रसार, प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना, ई-विकास प्रणाली अंतर्गत ई-टोकन उर्वरक वितरण व्यवस्था तथा पराली प्रबंधन जैसे विषयों पर विस्तार से जानकारी दी जाएगी।

इमलिया लश्करपुर में भी किया गया संवाद

ग्राम ढोलखेड़ी से शुभारंभ के पश्चात कृषि रथ ग्राम इमलिया लश्करपुर पहुंचा, जहां उपस्थित कृषकों के साथ नई ई-टोकन उर्वरक वितरण व्यवस्था एवं विभिन्न विभागीय योजनाओं पर चर्चा की गई। किसानों ने योजनाओं में गहरी रुचि दिखाई और अधिकारियों से जानकारी प्राप्त की। कृषि रथ अभियान के माध्यम से जिले के किसानों को आधुनिक, वैज्ञानिक एवं लाभकारी खेती की दिशा में प्रेरित कर किसान कल्याण वर्ष 2026 को सार्थक बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

संकल्प से समाधान अभियान, स्वच्छ जल अभियान, प्रदेश में जैव विविधता को समृद्ध करने जैसे विषयों पर किया संवाद

ई-गवर्नेंस व्यवस्था प्रदेश में पेपरलेस कार्य प्रक्रिया, समय की बचत और पारदर्शिता सुनिश्चित करेगी : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रदेश में ई-गवर्नेंस व्यवस्था को विस्तार देते हुए आज मंत्रि-परिषद की बैठक में टैबलेट लेकर पहुंचे। उल्लेखनीय है कि 6 जनवरी को हुई मंत्रि-परिषद की बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. यादव की पहल पर प्रदेश में ई-कैबिनेट की प्रक्रिया आरंभ करने के उद्देश्य से मंत्रीगण को टैबलेट उपलब्ध कराए गए थे। साथ ही मंत्रि-परिषद के समक्ष ई-टैबलेट एप्लीकेशन का प्रस्तुतिकरण हुआ था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि इस पहल से पेपरलेस कार्य प्रक्रिया अपनाने, समय की बचत और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

संकल्प से समाधान अभियान में 16 विभागों की 91 योजनाओं/सेवाओं का पात्र व्यक्तियों को मिलेगा लाभ

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रि-परिषद की बैठक से पहले अपने संबोधन में कहा कि 'संकल्प से समाधान अभियान' 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद की जयंती 'युवा दिवस' से प्रारंभ किया गया है। यह अभियान चार चरणों में 31 मार्च तक चलेगा। इस अभियान में शासन की विभिन्न योजनाओं और सेवाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों को दिया जाएगा। इसमें 16 विभागों की 91 योजनाएं/सेवाएं शामिल है। यह नगरीय और ग्रामीण क्षेत्र दोनों में साथ-साथ चलेगा। प्रथम चरण में 12 जनवरी से 15 फरवरी 2026 तक आवेदन प्राप्त करने की कार्यवाही होगी। द्वितीय चरण में 16 फरवरी से 16 मार्च तक प्रथम चरण में प्राप्त आवेदन/शेष आवेदन पत्रों के निराकरण के लिए शिविरों का आयोजन होगा। तृतीय चरण में 16 मार्च से 26 मार्च 2026 तक ब्लॉक स्तर पर शिविर आयोजित किए जाएंगे, जिसमें अनिराकृत शेष आवेदन और शिकायतों का निराकरण होगा। चतुर्थ चरण 26 मार्च से 31 मार्च 2026 तक चलेगा, जिसमें जिला स्तर पर शिविर आयोजित कर आवेदन एवं शिकायत का निराकरण होगा। जिला स्तर पर कलेक्टर एवं अनुभाग स्तर पर अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) द्वारा इस अभियान को लीड किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सभी प्रभारी मंत्रियों को अपने-अपने प्रभार के जिलों में सतत् मॉनिटरिंग करनी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि राज्य सरकार सभी को शुद्ध पेयजल देने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य में 'स्वच्छ जल अभियान' आरंभ किया जा रहा है, जो दो चरणों में संचालित होगा। प्रथम चरण 10 जनवरी से 28 फरवरी और द्वितीय चरण एक मार्च से 31 मार्च के मध्य संचालित होगा। आम नागरिकों की पेयजल समस्या के लिये हर मंगलवार को जल सुनवाई की भी व्यवस्था रखी गई है। अभियान के तहत समस्त जल शोधन यंत्र और पेयजल संग्रहण टंकियों की सफाई होगी, जिसकी निगरानी जीआईएस मैप आधारित एप से होगी।

मकर संक्रांति का दिन शुभ परिवर्तन आत्मबल और सकारात्मक सोच का प्रतीक

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मकर संक्रांति की अग्रिम मंगलकामनाएं देते हुए कहा कि मकर संक्रांति वह शुभ समय है जब सूर्य देव उत्तरायण होते हैं और प्रकृति में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस पावन अवसर पर 15 जनवरी को बाबई नर्मदापुरम से लाडली बहनों के खाते में जनवरी माह की 1500 रूपये की किश्त डाली जाएगी। उन्होंने कहा कि मकर संक्रांति का दिन शुभ परिवर्तन, आत्मबल और सकारात्मक सोच का प्रतीक माना जाता है। यह त्यौहार प्रदेशवासियों के जीवन में सुख-समृद्धि और खुशियां लाये। हमारा प्रदेश निरंतर विकास की ओर अग्रसर हो, यही कामना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पतंग उड़ाने, रंगोली प्रतियोगिता जैसी गतिविधियों से उत्साह और उमंग का संचार करने वाले इस त्यौहार पर चाइनीज मांझे के उपयोग के प्रति विशेष सतर्कता बरती जाए।

मप्र आयेंगे गेंडे, जंगली भैंसे और किंग कोबरा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि जंगली भैंसे, गेंडे एवं किंग कोबरा मध्यप्रदेश आयेंगे। उन्होंने गुवाहाटी प्रवास के दौरान असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा के साथ वन्य जीवों के आदान-प्रदान को लेकर चर्चा की है। दोनों राज्यों के बीच में सहमति बनी कि असम से 50 जंगली भैंसे 3 समूहों में 3 साल में, गेंडे का जोड़ा और किंग कोबरा मध्यप्रदेश भेजे जायेंगे। गेंडे का जोड़ा भोपाल के वन विहार में रहेगा। मध्यप्रदेश इसके बदले में असम की मांग के अनुसार टाइगर, मगरमच्छ और गौर देगा। मध्यप्रदेश में जंगली भैंसों की आबादी पिछले सौ वर्षों से भी अधिक समय पहले समाप्त हो चुकी थी। वर्तमान समय में देश में जंगली भैंसों की प्राकृतिक आबादी मुख्य रूप से असम राज्य तक सीमित रह गई है। इससे दोनों राज्यों की जैव विविधता और भी अधिक समृद्ध होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि उन्होंने असम प्रवास के दौरान गुवाहाटी के समीप स्थित ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान के केंद्र और 'सिल्क विलेज' के नाम से विख्यात सुआलकुची पहुँचकर रेशम उत्पादन की प्राचीन और पारंपरिक प्रक्रिया को बेहद करीब से देखा। गुवाहाटी से लगभग 35 किलोमीटर दूर स्थित सुआलकुची को 'पूर्व का मैनचेस्टर' कहा जाता है। इस गांव में विशिष्ट रेशम मूगा (सुनहरा), पैट (हाथीदांत जैसा सफेद) और एरी (हल्का बेज) का उत्पादन किया जाता है, जो असम की मूल पहचान है। प्रदेश में इसी क्रम में चंदेरी, महेश्वरी, बाघप्रिंटिंग जैसी प्रदेश की प्राचीन हथकरघा कलाओं को अधिक प्रोत्साहन दिया जाएगा। इससे, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हथकरघा क्षेत्र में प्रदेश की विशिष्ट पहचान बनाने में मदद मिलती है।

प्रदेश के 3100 से अधिक स्टार्ट-अप को महिलाएं कर रही हैं लीड

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इको-सिस्टम बन चुका है। मध्यप्रदेश में 6500 से अधिक रजिस्टर्ड स्टार्ट-अप संचालित हो रहे हैं। इनमें से 3100 से अधिक स्टार्ट-अप को महिलाएं लीड कर रही हैं। भोपाल में गत दिवस म.प्र. स्टार्टअप समिट 2026 आयोजित किया गया। समिट के दौरान 156 स्टार्ट-अप को 2.5 करोड़ रूपए से अधिक प्रोत्साहन राशि तथा मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना में 21 स्टार्ट-अप को 8.17 करोड़ रूपए से अधिक की ऋण राशि अंतरित की। विभिन्न सफल और विकासशील स्टार्ट-अप के फाउंडर्स और इंक्यूबेटर्स को सम्मानित किया। समिट में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के साथ फेडरेशन ऑफ इंडिया एक्सपोर्ट आर्गेनाइजेशन के साथ पंचवर्षीय एमओयू सहित सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, कार्वी स्टार्ट-अप लैब्स और स्टार्ट-अप मिडिल ईस्ट के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) भी हस्ताक्षरित किये गये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'विकसित भारत जी-राम-जी योजना' के संबंध में कहा कि यह गरीबों, खेतीहर मजदूरों, किसानों सहित सभी वर्गों के लिए बेहद लाभकारी है। इस योजना से गांवों के विकास को भी मजबूती मिलेगी।

कृषक कल्याण वर्ष में सरकार किसानों के हित में कार्य करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 10 जनवरी को भोपाल के जंबूरी मैदान में आयोजित विशाल किसान सम्मेलन में वर्ष 2026 को 'कृषक कल्याण वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की गई। कार्यक्रम में ई-विकास, वितरण एवं कृषि उर्वरक आपूर्ति समाधान प्रणाली (विकास पोर्टल) का शुभारंभ किया गया। मध्यप्रदेश का पहला राज्य है जिसने पूरा साल किसानों के कल्याण के लिए समर्पित किया है। इस वर्ष डिण्डोरी जिले में मध्यप्रदेश राज्य श्रीअन्न अनुसंधान केंद्र की स्थापना की जाएगी। ग्वालियर में सरसों अनुसंधान और उज्जैन में चना अनुसंधान केंद्र स्थापित किया जायेगा। तीस लाख से अधिक किसानों को अगले तीन साल में सोलर पावर पम्प उपलब्ध कराए जाएंगे। प्रदेश का सिंचाई रकबा अभी 65 लाख हेक्टेयर है, इसे बढ़ाकर वर्ष 2028-29 तक 100 लाख हेक्टेयर तक लेकर जाने का लक्ष्य है। कृषक कल्याण वर्ष का कैलेंडर जारी किया गया है। वर्ष भर कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन, सहकारिता, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति सहित कुल मिला कर 16 विभाग किसानों के हित में कार्य करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

स्वास्थ्य उपकरणों की उपलब्धता व उपयोग की करें मॉनिटरिंग

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने की स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण, मानव संसाधन की उपलब्धता और अधोसंरचना विकास कार्यों में आवश्यक निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने ब्यौहारी, बुढ़ार एवं उमरिया क्षेत्र में स्त्री रोग विशेषज्ञ के रिक्त पदों की शीघ्र पूर्ति के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने नर्सिंग शिक्षा को सशक्त बनाने हेतु नर्सिंग टीचर्स के 59 राजपत्रित पदों की मांग शीघ्र लोक सेवा आयोग को अग्रेषित करने के निर्देश दिए। सिंगरौली नर्सिंग कॉलेज के लिए भूमि चिन्हांकन एवं टेंडर प्रक्रिया समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने स्वास्थ्य उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ-साथ उनके उपयोग की सतत मॉनिटरिंग करने पर बल दिया।

चिकित्सकों की पदोन्नति हेतु 'लोक सेवा पदोन्नति नियम' से छूट प्राप्त करने संबंधी कार्यवाही सामान्य प्रशासन विभाग के माध्यम से करने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेश के सुपर स्पेशिलिटी अस्पतालों में कार्यरत मेडिकल टीचर्स के वेतन एवं भत्तों की समीक्षा की और आवश्यक निर्देश दिए। नवीन चिकित्सा महाविद्यालयों में रिक्त ट्यूटर/डिमॉन्स्ट्रेटर पदों पर सीधी भर्ती की कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने रक्ताधान सेवाओं को और बेहतर बनाने हेतु प्रदेश में एन.ए.टी. सुविधा का विस्तार करने के निर्देश दिए। बॉण्ड चिकित्सकों के लिए एकीकृत ई-अटेंडेंस व्यवस्था लागू करने एवं ऑनलाइन एन.ओ.सी. जारी करने की प्रक्रिया का क्रियान्वयन करने के निर्देश भी दिए गए। स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत पूर्व की निवेश नीति से संबंधित प्रकरणों के त्वरित निराकरण के लिए आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। चिकित्सा महाविद्यालयों में आउटसोर्स पदों की स्वीकृति के मानकों में सुधार कर स्किल्ड/सेमी-स्किल्ड कार्मिकों का प्रावधान करने हेतु प्रस्ताव मंत्रि-परिषद् के समक्ष प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं प्रदेश संगठन महामंत्री ने लोहड़ी व मकर संक्रांति की दी शुभकामनाएँ

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल एवं प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद ने लोहड़ी एवं मकर संक्रांति के पावन पर्व के अवसर पर प्रदेशवासियों एवं कार्यकर्ताओं को हार्दिक शुभकामनाएँ दी हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल ने नई फसल के स्वागत और हर्ष-उल्लास के पर्व लोहड़ी की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह पर्व सभी के जीवन में सुख, समृद्धि, सौभाग्य और खुशहाली लेकर आए तथा समाज में प्रेम, एकता और सद्भाव के भाव को और अधिक सुदृढ़ करे, यही हमारी मंगलकामना है। उन्होंने कहा कि मकर संक्रांति का पर्व सामाजिक समरसता, सौहार्द और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। यह पर्व प्रदेशवासियों के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और सद्भावना लेकर आए। मकर संक्रांति नई ऊर्जा और नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। उन्होंने प्रदेशवासियों के खुशहाल जीवन की कामना करते हुए कहा कि ऐसे पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ़ करने के साथ-साथ समाज को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करते हैं।

दिग्विजय बोले-राज्यसभा की सीट खाली कर रहा हूं

तीसरी बार उच्च सदन नहीं जाएंगे एमपी में फुल टाइम एक्टिव होंगे

भोपाल। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के सीनियर लीडर दिग्विजय सिंह का राज्यसभा का कार्यकाल तीन महीने बाद 9 अप्रैल को खत्म हो रहा है। वे दूसरी बार के राज्यसभा सांसद हैं। अब तीसरी बार राज्यसभा नहीं जाएंगे। दिग्विजय सिंह ने खुद इस बात पर मुहर लगाई है। भोपाल के समन्वय भवन में मंगलवार को

मीडिया ने दिग्विजय सिंह से पूछा- कांग्रेस के अनुसूचित जाति विभाग के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप अहिरवार ने आपको पत्र लिखकर अनुसूचित जाति वर्ग के नेता को राज्यसभा भेजने की मांग की है, आपकी क्या राय है। इस पर दिग्विजय सिंह ने कहा- ये मेरे हाथ में नहीं है। पार्टी निर्णय करती है। लेकिन एक बात मैं कहना चाहता हूं कि मैं अपनी सीट खाली कर रहा हूं। सूत्रों की मानें तो दिग्विजय सिंह ने पार्टी नेतृत्व को भी इस बात से अवगत करा दिया है। अब राज्यसभा के लिए पांच वरिष्ठ नेता रेस में बताए जा रहे हैं। प्रदेश में 2028 में विधानसभा के चुनाव होने हैं। सूत्र बताते हैं कि दिग्विजय ने पार्टी आलाकमान से कहा है कि वे एमपी में ही पूरा टाइम देना चाहते हैं। इस साल मई से अगले ढाई साल यानी कि विधानसभा चुनाव तक अलग-अलग चरणों में एमपी के दौरे करके कांग्रेस की जमीन तैयार करेंगे। सूत्रों की मानें तो दिग्विजय बड़ी सभाओं और भीड़ वाले कार्यक्रमों के बजाय छोटी बैठकें विधानसभा और ब्लॉक स्तर पर करने पर विचार कर रहे हैं। हालांकि, दिग्विजय ने अपनी रणनीति को लेकर पत्ते नहीं खोले हैं। कांग्रेस में राज्यसभा सीट को लेकर अंदरूनी खींचतान शुरू हो गई है। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अनुसूचित जाति विभाग के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप अहिरवार ने दिग्विजय को पत्र लिखकर राज्यसभा में अनुसूचित जाति वर्ग से प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने की मांग उठाई है। अहिरवार ने पत्र में कहा है कि हाल ही में भोपाल डिक्लेरेशन से जुड़ी प्रेसवार्ता में दिग्विजय द्वारा अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग से मुख्यमंत्री बनने की संभावना पर प्रसन्नता जताना सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसी भावना के अनुरूप अब राज्यसभा में भी अनुसूचित जाति वर्ग को अवसर मिलना चाहिए। कांग्रेस को जमीनी स्तर पर मजबूत करने और संगठनात्मक सुधारों को लेकर दिग्विजय पिछले महीने दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय में प्रजेंटेशन दे चुके हैं। इस दौरान प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी, पीसीसी अध्यक्ष जीतू पटवारी और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार भी मौजूद थे।

बैठक में दिग्विजय ने सुझाव दिया था कि कांग्रेस संगठन को मजबूत करने के लिए प्रदेशभर में यात्राएं निकाली जाएंगी। ये यात्राएं अलग-अलग स्तरों पर होंगी और उनका उद्देश्य सीधे कार्यकर्ताओं से जुड़ना होगा।

संक्रांति बाद नया सिस्टम, मावठा गिरने के आसार

सर्द हवा से ठिठुरा ग्वालियर-चंबल, तेज ठंड-कोहरे का असर भी

भोपाल। पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में 15 जनवरी से नया वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव हो रहा है। मौसम विभाग के अनुसार, यह सिस्टम स्ट्रॉन्ग है। इस वजह से 2 से 3 दिन बाद एमपी के उत्तरी हिस्से में मावठा गिरने के आसार है। इससे पहले ग्वालियर, चंबल, रीवा और सागर संभाग में मध्यम कोहरा और तेज ठंड का असर बना रहेगा। मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार को ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना और रीवा में मध्यम कोहरा रहा। इसके अलावा भोपाल, इंदौर, उज्जैन, खजुराहो, गुना, शिवपुरी, शाजापुर, सीहोर में भी कोहरा है। हालांकि, विजिबिलिटी 1 से 2 किलोमीटर तक है। वहीं, उत्तरी हिस्से में सर्द हवाओं का असर बना रहेगा। वजह यहां बर्फीली हवाएं सीधे आना है। तेज सर्दी होने से ग्वालियर में न्यूनतम तापमान 6 डिग्री से नीचे चल रहा

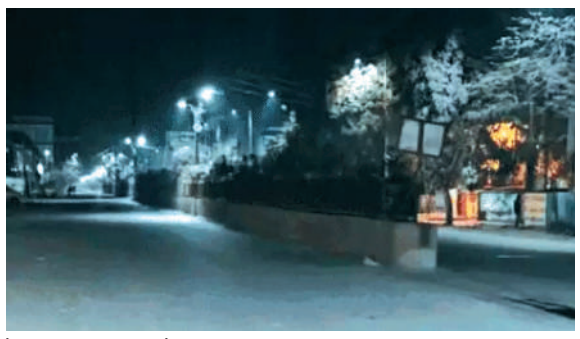

है। दतिया, श्योपुर जैसे जिलों में भी सर्दी का असर बरकरार है। भोपाल, इंदौर, जबलपुर और उज्जैन में पारा 10 डिग्री से नीचे बना हुआ है।

शहडोल का कल्याणपुर प्रदेश में सबसे ठंडा- रविवार-सोमवार की रात प्रदेश के पांच बड़े शहरों में ग्वालियर सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 5.6 डिग्री दर्ज किया गया। भोपाल में 9 डिग्री, इंदौर में 9.6 डिग्री, उज्जैन में 9.4 डिग्री और जबलपुर में 9.8 डिग्री दर्ज किया गया। वहीं, कल्याणपुर में तापमान 4.8 डिग्री दर्ज किया गया। दतिया में 5.4 डिग्री, राजगढ़-पचमढ़ी में 5.6 डिग्री, मंडला में 5.9 डिग्री और खजुराहो में 6.5 डिग्री सेल्सियस रहा। प्रदेश के ज्यादातर जिलों में पारा 10 डिग्री से नीचे ही रहा। सोमवार को दिन में दतिया सबसे ठंडा रहा। यहां अधिकतम तापमान 19.8 डिग्री दर्ज किया गया। ग्वालियर में 21.8 डिग्री, पचमढ़ी में 21.2 डिग्री, नौगांव में 21.6 डिग्री, रीवा में 22.2 डिग्री, खजुराहो-श्योपुर में 22.6 डिग्री और मलाजखंड में तापमान 22.8 डिग्री रहा।

छा रहा कोहरा, ट्रेनों की टाइमिंग पर असर

नए साल में प्रदेश में कड़ाके की ठंड और घने कोहरे का असर है। इस वजह से दिल्ली से भोपाल, इंदौर और उज्जैन आने वाली ट्रेनें निर्धारित समय से लेट हो रही है। इनमें सबसे ज्यादा असर मालवा एक्सप्रेस में हो रहा है। इसके अलावा पंजाब मेल, जनशताब्दी, झेलम, सचखंड एक्सप्रेस समेत एक दर्जन ट्रेनें भी प्रभावित हो रही है। इस बार मध्यप्रदेश में नवंबर-दिसंबर की सर्दी ने रिकॉर्ड तोड़ दिया। नवंबर में 84 साल में सबसे ज्यादा ठंड पड़ी तो दिसंबर में 25 साल का रिकॉर्ड टूटा। नवंबर-दिसंबर की तरह ही जनवरी में भी कड़ाके की ठंड पड़ रही है। इससे भोपाल में ठंड का 10 साल का रिकॉर्ड टूट गया है। एक्सपर्ट की माने तो जनवरी में प्रदेश में माइनस वाली ठंड गिर चुकी है। अबकी बार भी तेज सर्दी, घना कोहरा छाने के साथ शीतलहर भी चल रही है।

26 जनवरी को अच्छे आचरण वाले 87 कैदी होंगे आजाद

7 महिलाएं भी शामिल, जेल विभाग ने प्रस्ताव परीक्षण बाद लिया निर्णय

भोपाल। मध्यप्रदेश में 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर विभिन्न जेलों में कैद 394 बंदियों को बड़ा झटका लगा है, उन्हें जेल से रिहा नहीं किया जाएगा। सरकार की प्रस्ताव को जेल विभाग ने ठुकरा दिया है। हालांकि 87 बंदियों के लिए खुशियों की खबर आई है। राज्य सरकार ने इन बंदियों को उनके अच्छे आचरण और जेल मैन्युअल की पात्रता के आधार पर समय-पूर्व रिहा करने का फैसला किया है। जेल विभाग ने कुल 481 बंदियों की रिहाई के प्रस्तावों का बारीकी से परीक्षण किया था, जिसमें से 394 बंदियों को अपात्र पाए जाने पर उनके प्रस्ताव निरस्त कर दिए गए हैं। जेल विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार, यह निर्णय दंड प्रक्रिया संहिता 1973 और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की संबंधित धाराओं के तहत लिया गया है।

हॉक फोर्स के 61 जवानों को आउट ऑफ टर्न प्रमोशन

नक्सलवाद के खात्मे के बाद डीजीपी ने दी बड़ी मंजूरी, आरक्षक से सब इंस्पेक्टर तक प्रमोट होने के मिले चांस

भोपाल। मध्यप्रदेश में नक्सलवाद के खात्मे के बाद पुलिस मुख्यालय ने हॉक फोर्स के जवानों को बड़ी सौगात दी है। पुलिस मुख्यालय ने नक्सल मुठभेड़ों में साहसिक भूमिका निभाने वाले 61 पुलिस कर्मियों को आउट ऑफ टर्न प्रमोशन देने का फैसला किया है। इनमें से 60 पुलिसकर्मियों को शीघ्र पदोन्नति दी जाएगी, जबकि एक पुलिसकर्मी का प्रमोशन लिफाफा बंद कर दिया गया है। ये सभी पुलिसकर्मी विशेष सशस्त्र बल (SAF) और बालाघाट जिला पुलिस बल से संबंधित हैं। इन जवानों को प्रतिबंधित माओवादी के जीआरबी डिवीजन के मलाजखंड दलम के चार एरिया कमेटी सदस्यों को मुठभेड़ में मार गिराने के लिए पदोन्नति दी जा रही है। मारे गए नक्सलियों में रीता उर्फ तुब्बी श्रीरांगु हिडामी (पति चंदू उर्फ देवचंद), सुमन, इमला उर्फ तुलसी और रवि मडावी उर्फ बदरेको शामिल हैं। पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाणा द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि सूचीबद्ध सभी पुलिसकर्मियों को आउट ऑफ टर्न प्रमोशन देने की कार्रवाई की जाएगी। सब इंस्पेक्टर से इंस्पेक्टर बने : सब इंस्पेक्टर से इंस्पेक्टर पद पर प्रमोशन पाने वालों में बिपिन चंद्र खलको, इंदर सिंह बिदूरी, शुभम प्रताप सिंह तोमर, रत्नेश मीणा और नवदेश श्रीवास्तव शामिल हैं। एएसआई से एसआई : मुनेंद्र सिंह को सहायक उप निरीक्षक से उप निरीक्षक पद पर पदोन्नत किया गया है। प्रधान आरक्षक से एएसआई (SAF) बने ये जवान : प्रधान आरक्षक एसएएफ से सहायक उप निरीक्षक एसएएफ बनने वालों में रुद्री चंद्र ज़खमोला, अनिल सिंह भदोरिया, मत्ते सिंह मरावी, उज्जवल घोरमारे, मनोज कुमार यादव, देवेंद्र धुर्वे, रविंद्र कुशवाह, हरेंद्र सिंह, प्रदीप गोसाई, विनोद कुमार मर्सकोले, उमेश कुमार पटेल और विकास कुमार राजपूत शामिल हैं। आरक्षक से प्रधान आरक्षक पद पर प्रमोशन : एसएएफ के जिन जवानों को आरक्षक से प्रधान आरक्षक पद पर प्रमोट किया जाना तय हुआ है, उनमें मुकेश सगर, विवेक परस्ते, राघवेंद्र सिंह गुर्जर, आशीष रजक, शिवहरि मरावी, प्रवीण धुर्वे, टीकाराम ढकालु, प्रवीण कुमार, असित यादव, राम आशीष यादव, संदीप शर्मा, लोकपाल धाकड़, कृष्णा श्रेष्ठ, जितेंद्र सिंह पटेल, वीर सिंह, शकर चंद्र सरयाम, सुनील परिवार, चंद्रकांत पांडे, सत्यम द्विवेदी, सुनील यादव, देवराज कलमे, सुरेंद्र सिंह मार्को, सुशील उइके के नाम शामिल हैं। इसके अलावा रामलाल भील, उमेश चंद्र दुबे, संतोष कुमार मरावी, प्रदीप कुमार परते, राजा मालवीय, विशाल कुमार सिंह, नरेंद्र सोनबे, दीपक पवार, कन्हैया मरकाम, सुनील सिंह कुशवाह, मुलायम सिंह, वरुण देव सिंह चाहर, मुनीष कुमार द्विवेदी, नीलेश, महेंद्र सिंह, रवि कुमार यादव, छठु यादव, सलेश कुमार द्विवेदी और संजू शर्मा को भी पदोन्नति दी जाएगी।

एक का प्रमोशन लिफाफा बंद

प्रधान आरक्षक संत कुमार धुर्वे के खिलाफ बालाघाट जिले के लांजी थाना क्षेत्र में प्रकरण दर्ज होने के चलते उनका पदोन्नति लिफाफा फिलहाल बंद कर दिया गया है। पुलिस मुख्यालय का मानना है कि इन बहादुर जवानों की कार्रवाई से बालाघाट और आसपास के क्षेत्रों में नक्सल नेटवर्क को निर्णायक रूप से कमजोर किया गया है। यह प्रमोशन नक्सल विरोधी अभियानों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले पुलिस बल का मनोबल बढ़ाने की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है।